ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

नवम्बर 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

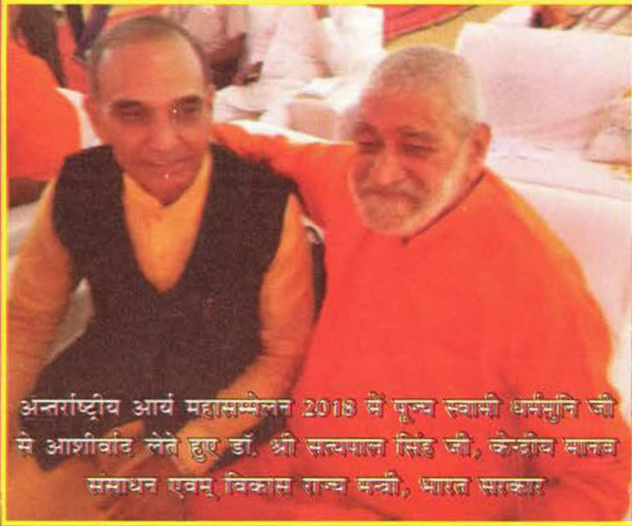

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी से आशीर्वाद लेते हुए डॉ. श्री सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय मानव संसाधन एवम् विकास राज्य मन्त्री, भारत सरकार

घड़ी एवम् स्मारिका देकर सम्मानित करते हुए श्री प्रदीप राणा घेवरा, दिल्ली को पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी श्री सत्यपाल जी वत्स एवम् आचार्य चांद सिंह जी। इन्होंने सुपुत्र श्री मनीष के जन्मदिवस पर गौशाला में भूसे हेतु 41000/- रूपये की सहयोग राशि दान दी।

आत्मशुद्धि पथ की ओर से
दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएँ

पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्य अधिष्ठाता

मंगलवार 20 नवम्बर 2018 के 83वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन (विवरण कवर पृष्ठ 3 पर)

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पंवार यज्ञ पात्र दानरूप देते हुए व पूज्या माता कृष्णा झाम से आशीर्वाद लेते विक्रम देव जी

प्रथम चित्र में कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पवार यज्ञ पात्र दानरूप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ को देते हुए। साथ में पूज्य स्वामी रामानन्द जी, श्री आचार्य चांद सिंह जी, पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी, ब्र. कर्ण आर्य एवम् श्री राजवीर जी आर्य। द्वितीय चित्र में पूज्या माता कृष्णा झाम से आशीर्वाद लेते विक्रम देव जी शास्त्री

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

1065
श्री जगवीर सिंह जी सोलंकी
साहाबाद मोहम्मदपुर, दिल्ली

1066
श्री जय प्रकाश जी आर्य
महम, रोहतक, हरियाणा

1067
श्री नागेन्द्र जी लाकड़ा
सैक्टर-9, बहादुरगढ़

1068
श्रीमती मृदुला जी चोटानी
गुरुग्राम, हरियाणा

1069
श्री हीरा लाल जी चावला
पश्चिम विहार, दिल्ली

प्रिय बन्धुओं! मास नवम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी दिसम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-ALLA0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

कार्तिक-मार्गशीर्ष सम्वत् 2075 नवम्बर 2018

सृष्टि सं. 1972949119 दयानन्दाब्द 194

वर्ष-17) संस्थापक–स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-11

(वर्ष 48 अंक 11)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

❖

सम्पादकः

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला–झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार	4
तेरी वंदना के गीत गाता हूँ	5
दड़ मार रहा पाखंड व अंधविश्वास पुनः जागृत....	6
वेदों में मानव मनः शक्ति एवं परमात्मा की प्राप्ति	8
कर्म फल व्यवस्था में कुछ मान्य भ्रान्तियों का शंका...	12
नाल्पे सुखमस्ति	14
घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना कल	18
सर्दी का मेवा: खजूर	20
क्यों होते हैं बच्चे निराश...	21
दीवाली रंग लायेगी	22
ऋषि को समर्पित भजन/हंसो और हंसाओ	23
धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास व पाखण्डों का....	24
खुशी क्या है?	26
स्वामी दयानन्द को अपना गुरु और आर्यसमाज को....	27
स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द	31
आओ दीप जलाएँ	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम का मासिक यज्ञ-सत्संग उत्साह एवम् श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न

अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम का मासिक यज्ञ-सत्संग रविवार 14 अक्टूबर 2018 को उत्साह एवं श्रद्धा के साथ प्रात: 9 बजे से 2 बजे तक सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चांदसिंह आर्य एवं यजमान कैप्टन महेन्द्र सिंह पंवार (अमेरिका वाले) रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान कन्हैया लाल आर्य जी रहे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन आश्रम परिवार के सदस्य व गुरुकुल झज्जर के मन्त्री, राजवीर आर्य ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया। इस अवसर पर कैप्टन महेन्द्र पंवार जी, आचार्य चांद सिंह जी, रामलाल आर्य, सुखपाल आदि के बहुत ही सुन्दर भजन हुए। कार्यक्रम में एडवोकेट जय नारायण, मनमोहन (प्रभारी, युवा भारत गुरुग्राम), स्वामी सच्चिदानन्द, आदि द्वारा बहुत ही प्रभावशाली उद्बोधन दिया गया। कार्यक्रम उपरान्त आए हुए श्रद्धालुओं के लिए कैप्टन महेन्द्र पंवार द्वारा बहुत ही स्वादिष्ट भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई थी, उनके द्वारा ही आश्रम में भोजन हेतु बैठने के लिए टाट-पट्टी (मैंट) भेंट किए गए। इस अवसर पर कन्हैयालाल जी ने बहादुरगढ़ आश्रम के पहलवानों हेतु कुश्ती की किट भेंट की गई। सभी महानुभावों का स्वामी सच्चिदानन्द ने आभार व्यक्त किया। और उन्हें सम्मान चिन्ह भेंट कर सम्मानित भी किया। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा सभी वक्ताओं, श्रोताओं और कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद के साथ-साथ अगले माह होने वाले मासिक सत्संग जो कि 11 नवम्बर 2018 रविवार को होगा का निमन्त्रण दिया गया। इस शुभ अवसर पर बलवान आर्य माण्डौठी, उम्मेद सिंह जी आर्य माजरी, हरपाल जोनियावास, रामकुमार श्री भगवान्, रूक्मेश आर्या, अजय, मंजीत, संदीप आदि की विशेष उपस्थिति रही।

डी.सी. को भेंट की प्रार्थना, संध्या व हवन मन्त्रों की पुस्तक

वैदिक सत्संग मण्डल समिति के अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र वैदिक द्वारा प्रकाशित प्रार्थना, संध्या व हवन मन्त्रों की पुस्तकों का एक सैट जिला उपायुक्त सोनल गोयल को सौंपा। पं. रमेश चन्द्र वैदिक ने बताया कि इन पुस्तकों को छात्रों को भी वितरित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि समिति अब तक 67 विद्यालयों में व्याख्यान माला कार्यक्रम कर चुकी है। इन व्याख्यान माला में विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण की शिक्षा के अलावा भारतीय संस्कृति बारे भी बताया जाता है। गौरतलब है कि पं. रमेश चन्द्र वैदिक को जिला स्तरीय कार्यक्रमों में सम्मानित किया जा चुका है। वहीं डी.सी. सोनल गोयल ने पं. रमेश चन्द्र वैदिक के कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि समिति ने कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध जो अभियान चलाया है उसका समाज में काफी असर देखने में मिला है।

ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र

हे भगवन्! आप आकाशवत् सर्वत्र व्याप्त हो, हरदम हमारे साथ हो, हमारे पास हो। हमारे कर्मों को हर समय देख रहे हो। हमारे कर्म फल की व्यवस्था कर रहे हो। आपने हमें कर्म करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दे रखी है। परन्तु कर्मों का फल भोगने में आपके आधीन हैं। शुभ अशुभ कर्मों के अनुसार हमें फल भोगने होंगे। यह आपका अटल नियम है। इस तथ्य को जानते हुए यदि हम गलत काम करते हैं तो हमारी मूर्खता है। खोटे कर्मों की सजा भोगनी ही पड़ेगी। आपकी न्याय प्रणाली में क्षमा की कोई जगह नहीं है। हे प्रभो! हमें खोटे कर्मों से बचाओ। श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दो।

-देवराज आर्य मित्र, नई दिल्ली-64

तेरी वंदना के गीत गाता हूँ

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ,
मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः।
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति,
वन्दारूस्ते तन्वं वन्दे अग्ने॥

ऋग् 1.147.2

ऋषि: **दीर्घतमा औचथ्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

(**यविष्ठ**) हे सबसे अधिक युवा (**स्वधावः**) स्वात्मनिर्भर (**अग्ने**) परमेश्वर! (**मे**) मेरे (**अस्य**) इस (**मंहिष्ठस्य**) अतिशय उच्च (**प्रभृतस्य**) प्रकृष्ट रूप से आहत (**वचसः**) स्तुति-वचन को (**बोध**) जान। (**त्वः**) कोई (तेरी) (**पीयति**) निन्दा करता है, (**त्वः**) कोई (**अनुगृणति**) अनुकूल अर्चना करता है। (पर) (**वन्दारूः**) वन्दनशील (मैं) (**ते**) तेरे (**तन्वं**) स्वरूप की (**वन्दे**) वन्दना (ही) करता हूँ।

हे अग्ने! हे तेज पुंज परमात्मन्! तुम 'यविष्ठ' हो, युवतम हो, सबसे अधिक युवा होता है, उसमें उतनी ही अधिक शक्ति होती है। परिणामतः तुम अतुल शक्ति के भण्डार हो। साथ ही तुम 'चिर-युवक' हो, सदा युवा रहने-वाले हो। हम मानव तो शैशव, यौवन, बुढ़ापा आदि विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते रहते हैं और उन-उन अवस्थाओं में कभी अल्प-शक्तिमान, कभी विपुल-शक्तिशाली और कभी जराजीर्ण होते रहते हैं। पर तुम सदा सदा युवक और शक्तिसम्पन्न ही बने रहते हो। हे प्रभु! तुम 'स्वधावान्' भी हो। स्वधा का अर्थ है, स्वात्म-धारण-शक्ति या आत्म-निर्भरता। तुम कभी हम शुद्र प्राणियों की तरह पराश्रित नहीं रहते, किन्तु सदा स्वात्मनिर्भर रहते हो। तुम्हें अपने किसी कार्य के लिए परमुखापेक्षी नहीं होना पड़ता। ऐसे महामहिमा-सम्पन्न तुम्हारे प्रति मैं स्तुति वचनों की भेंट लाता हूँ। मेरे यह परिपूर्ण नहीं है और प्रकृष्ट रूप से आहृत हैं।मन की जिस तन्मयता से तुम्हारी जो स्तुति होनी चाहिए और उसमें जो गरिमा होनी चाहिए, उससे ये युक्त हैं। ये दिखाने मात्र के लिए कहे गये निःसार वचन नहीं हैं, किन्तु हृदय से निकले हुए सच्चे उद्‌गार हैं। अतएव तुम मेरे इन स्तुति-वचनों को सुनो, जानो और जानकर मेरी याचनाओं को पूर्ण करो।

यह जग बड़ा ही गोरखधंधा है। इसमें द्विविध प्रवृत्तिवाले जन दिखाई देते हैं। कुछ तुम्हारी हिंसाकरने का उतारू हैं। वे नास्तिकता का दम भरते हुए ताल ठोककर कहते हैं कि-'कोई ईश्वर नाम की वस्तु संसार में नहीं है, मनुष्य स्वयं अपना भाग्य-विधाता है, प्रकृति स्वयं अपने खेल रचाती है, बीच में ईश्वर को लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि ईश्वर है भी तो वह अत्यन्त निन्दनीय है, क्योंकि व्यर्थ ही हमारे और प्रकृति के कार्य में हस्तक्षेप करता है।'' यद्यपि कुछ लोग इस प्रकार की बातें कहते हैं, पर सब लोग ऐसे नहीं है, क्योंकि अनेक जन तुम्हारी अर्चना में रस लेते हैं। मैं तुम्हारे निंदक और हिंसक नास्तिक-जनों ही अनुसरण नहीं, किन्तु तुम्हारे आस्तिक-जनों का की अनुसरण करता हूँ। मैं 'वन्दारू' बनकर, वन्दनशील होकर, तुम्हारे स्वरूप की वन्दना करता हूँ, तुम्हारे गुणों का गान करता हूँ, और तुम जैसा बनने का प्रयास करता हूँ। मुझे बल दो कि मैं सच्चे अर्थों में तुम्हारा 'वन्दारू' बन सकूँ।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

दड़ मार रहा पाखंड व अंधविश्वास पुनः जागृत हो उठा है

- राजवीर आर्य

दादा बस्तीराम से एक सज्जन ने कहा कि दादा हरियाणा में पाखंड व अंधविश्वास समाप्त हो गया है तो इसका उत्तर देते हुए उस विद्वान प्रज्ञाचक्षु उपदेशक ने कहा कि अभी अंधविश्वास पाखंड व कुरीतियां समाप्त नहीं हुई है अभी ये दड़ मार गई है। (अर्थात् जान बुझ कर मरने का अभिनय करना) उस तपस्वी महा उपदेशक की बात सत्य सिद्ध हो रही है, उल्टा पाखड़, अंधविश्वास, कावड़ लाना आदि इनका प्रचलन बढ़ गया है। सावन के महीने में लाखों लोग कावड़ लाते है। इन कावड़ियों में अधिकांश नशेडी, अपराधी व उत्पाती प्रवृति के नवयुवक होते है। खुले आम चरस पीना, महिलाओं के साथ छेड़-छाड़ करना, रास्ता रोकना, गाड़ियों कि तोड़-फोड़ करना अब आम बात हो गई है। पहले इनका भोला केवल चरस, गांझा व धतुरा ही पीता था, अब तो इसके भक्त सरेआम शराब भी पीने लग गये है। पुलिस इनके सामने विवश नजर आती है। आये भी क्यों नहीं जब यू.पी. में एन.डी. जी. स्तर का अधिकारी हेलिकॉपटर से कावड़ियों पर गुलाब के फुलों कि वर्षा क्रर रहा है। मेरठ में एस.पी. भी हेलिकोपटर से गुलाब की पंखुड़ियां बरसा रहा है। मेरे मतानुसार यह किसी अधिकारी का फैसला नहीं हो सकता और ना ही उसके अधिकार क्षेत्र और कर्तव्य में यह बातें आती है। यह तो स्पष्ट तौर पर सरकार के संकेत से ही सब कुछ हो रहा था। जब हमारी सरकारे ही अंधविश्वास को बढ़ावा देंगी तो इनको कैसे समाप्त किया जाये। इस कावड़ के पीछे कितना अपव्यय होता है किसी से छुपा हुआ नहीं। जगह-जगह मुनियों की तरह इनका स्वागत व चरणवन्दना होती है। घर आने पर सारा परिवार इकट्ठा होकर कढ़ाई करता है और लड़कियों को भेंट प्रदान की जाती है। एक कावड़िया कम से कम पांच हजार से दस हजार तक खर्च करता है, अगर ठीक-ठीक अनुमान लगाया जाये तो इस पैसे से कोई बड़ा प्रोजेक्ट शुरु किया जा सकता है। बहुत दु:ख होता है जब सुधीर मक्कड़ नाम का दर्जी उर्फ गोल्डन बाबा 25 किलो सोना गले में पहन कर कावड़ लेने जाता है। कहां गये आबकारी विभाग के अधिकारी, कहां गई सरकार की गरीबी मुक्त करने की योजना? जिस व्यक्ति पर दर्जनों मुकदमें हैं, और वह सरेआम करोड़ों का सोना पहन कर कावड़ ला रहा है। भिन्न-भिन्न प्रकार की कावड़ों का प्रचलन हो गया है। इतना ध्वनि प्रदूषण होता कि कई बार तो कान बंद करने पड़ते है। धन्यवाद परमात्मा का कि इनके बम-बम कही गिरकर फटते नहीं है। कावड़ का कोई इतिहास नहीं है और ना ही इसका कोई शाब्दिक अर्थ निकलता है। ऐसा सुना जाता है कि वर्षो पहले जब न्यायपालिका से ज्यादा सामाजिक सर्व खाप पंचायत प्रणाली को महत्व दिया जाता था तो जिससे कोई छोटा-मोटा अपराध हो जाता था उससे यही कहा जाता था कि जा तू गंगा जल ला उससे नहां कर प्रायश्चित कर। साधन नहीं होते थे और यह एक सजा कि प्रणाली के रूप में स्थापित थी, जो आज इस स्वरूप में आपके सामने है। इन सबके पीछे अज्ञान, अविद्या व स्वार्थ ही होता है। पाखंडों, अंधविश्वासों व कुरीतियों का स्वरूप बदलता रहता है। पहले संतोषी मां की खुब दुकानदारी चली। भूत-भूतनियों का स्वरूप चमत्कारी बाबाओं ने ले लिया है। पहले नवरात्रों का प्रचलन नहीं था, अब साल में दो-दो बार नवरात्रे आ रहे है। कलश यात्रायें निकाली जा रही है। अंधविश्वासों और पाखंड़ो का मुख्य हिस्सा मार्किटिंग से जोड़ दिया गया है। हरि मिर्च और नीबू का दुकान में बांधने के पीछे क्या अभिप्राय है? अगर कोई भाई इसका व्यापार की वृद्धि और नजर से बचाने के लाभ जानता है तो हमें भी बताये बहुत सस्ता सौदा है। लाभ प्राप्त करने का कई तथाकथित तांत्रिक, साधु

या जयोतिष दावा करते हुये दिखाई देंगे कि वे गड़े हुये धन को बता देंगे, काहीं चोरी हो गई है तो चोर को चोरी का सामान वापस करने के लिए विवश कर देंगे, प्रेमिका से छुटकारा दिलवा देंगे, पति को वश में करना, पुत्र प्राप्ति, झगडालू पड़ोसी से निजात दिलवाना, लड़कों को नौकरी दिलवाना, शादी में आई हुई अड़चन दुर करना इनका बाये हाथ का खेल है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि ज्यादातर तांत्रिक मुस्लिम होते है और अपने चुंगल में फंसाने में बड़े माहिर होते है। तरह-तरह के शोषण करते है। ज्यादातर ज्योतिषी, तांत्रिक व बाबा अपराधिक प्रवृति के होते है, नाम बदलकर अपनी दुकानदारी को खूब चमकाते है। हमें तो बड़ा आश्चर्य होता है जब भोली-भाली और यहां तक पढ़ी लिखी महिलाओं को बहकाया जाता है कि बुधवार को व्रत रखो पीला कपड़ा पहनो, शनि को ऐसा सोमवार को व्रत का यह लाभ होगा, मन्दिर जाओ तो नंगे पैर जाओ और हद तो तब हो जाती है जब ये निर्दयी इन बहनों को पुरा जेठ मांस नंगे पैर तपने के लिए प्रेरित करते है। हर जगह पाखंड का बोल-बाला विवाह के लिए सर्वप्रथम कुण्डली का मिलाना फिर विवाह की तिथि का मुहर्त फिर संस्कार का मुहर्त और फिर पता चलता है कि चार दिन पश्चात तो रिश्ता टूट गया। इसका क्या उत्तर है, इन कुण्डली निर्माताओं और मुहर्त निकालने वालों के पास? आज से 30-40 वर्ष पहले जितनी भी शादियाँ होती थी सौ प्रतिशत सफल होती थी। तब कौन कुण्डली मिलाता था? होना तो यह चाहिए कि हम लड़के और लड़की के गुण, कर्म और स्वभाव मिलाये। परिवारों कि विचारधारा का अध्ययन करे। लेकिन हो उल्टा रहा है। इसी प्रकरण में हम आपको बता दे कि मुश्किल तो उन बेचारे नवयुवकों और नवयुवतियों की होती है जो मंगल वाले दिन पैदा होते है उनको मांगलिक दोष लग जाता है। अगर लड़का भी मंगली है और लड़की भी मंगली है तो उनका आपस में विवाह नहीं हो सकता। हां पं. जी की भारी पेट पुजा करके इस मांगलिक दोष को दुर भी किया जाता है। हमे याद है कि प्रसिद्ध नट अमिताभ बच्चन जी ने अपने लड़के के इसी दोष को दुर करने के लिए बहुत से मन्दिरों में पुजा पाठ करवाई और स्वयं करी और अन्त में 9 लाख कीमत की हीरा तिरूपती बाला जी मन्दिर में भेट स्वरूप चढ़ाया जो दक्षिण भारत का सबसे बड़ा मन्दिर माना जाता हैं। जब इस तरह के प्रसिद्धि प्राप्त लोग ऐसा करते है तो इन अंधविश्वासों को और बल मिलता है।

जन्म पत्री बनवाना ही सबसे बड़ा पाखंड है और अंधविश्वास है। इसका तो इतना ही तात्पर्य है कि आपकी आयु का ठीक-ठीक प्रमाण पत्र रहे बाकि कौन सा ग्रह इसमें भारी हल्का दिखाया गया है। यह आपकी दक्षिणा और पंडित जी की कृपा दृष्टि पर निर्भर करता है। क्योंकि फिर उपाय भी तो इसी ने बताना है। हमें आज तक यह ज्ञात नहीं है कि यह मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला बालक के बड़े होने पर उसके हर कार्य में बाधा क्यों और कैसे उत्पन्न होगी? और फिर अनुष्ठान कराने पर यह शान्त व कृपालू क्यों हो जाता है। क्या यह नक्षत्र जीवित है? ऋषि दयानन्द तो इस जन्म-पत्री को शोक-पत्री कहा करते क्योंकि पंडित जी लिख दिया करते कि 10वां साल फिर 18वां साल और 24वां साल आदि-आदि बहुत भारी है। शरीर पर बहुत कष्ट आयेंगे। किसी-किसी का तो लिख देते बचना मुश्किल है। माता-पिता का हृदय आप सभी जानते ही है फिर वही ठग विद्या शुरु हो जाती है।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

वेदों में मानव मनः शक्ति एवं परमात्मा की प्राप्ति

- मृदुला अग्रवाल

विश्व में मानव ही ऐसा प्राणी है जिसको परमात्मा ने विवेकपूर्ण मस्तिष्क एवं 'मन' को संयत करने की बुद्धि प्रदान की है। केवल मानव ही अपनी बुद्धि के सहारे अपने मनावेगों पर अंकुश लगाकर 'मन' को संयमित संतुलित शक्ति को भावात्मक स्तर से ऊपर उठाकर 'परमानन्द' प्राप्त कर सकता है। अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-11, मन्त्र-5 के अनुसार परमात्मा ने सूर्यादि के सदृश प्रकाश-मान, तेजः स्वरूप स्वर्ग (सुखधाम) देकर मानव के 'मन' को शक्तिशाली बनाया। वैदिक-काल में मन-इन्द्रियों को रोककर आत्म-साक्षात्कार करने की दर्शनिक क्रिया का बड़ा महत्व था। इसीलिए प्राचीन ऋषियों ने मानव को सर्वोत्तम प्राणी घोषित किया था। मानव प्राणी ही आध्यात्मिक एवं नैतिक आचरण को अनायास ही अपने जीवन में लाकर पूर्णता की ओर स्वयं को विकसित कर सकता हैं। सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति, दृढ़, संकल्प, वैराग्य, धैर्य, संतोष, आत्म-संयम, शान्त-भाव, मन का निग्रह मन की प्रसन्नता, अन्तःकरण की पवित्रता, भगवत् मनन-चिन्तन करने का स्वभाव-ये सब मन-सम्बन्धी तप कहलाते हैं एवं ये सब सुविकसित मन की विचारधारा ही तो है। अनुशासन द्वारा लायी ऐसी "मनः शक्ति" एवं शान्ति ही "शम" का तात्पर्य है। भक्ति में भी यही तो होता है कि भक्त अपने प्रियतम परमात्मा के ध्यान में मग्न हो जाता है और सांसारिक चेष्टाएँ खुद-ब-खुद छूट जाती हैं। ज्यो-ज्यों हम 'मन' को संयमित करने में सफल होंगे, मन सांसारिक विषयों से हटता जायेगा। 'सन्मार्ग में लगे हुए मन को जो मनुष्य सतावे, उसे परमेश्वर सब तरह से कठिन फांस में बंधा जीवन देता है।'-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-12, मन्त्र-2।। 'मन' विचार-प्रवाह है। मन के सन्मुख कोई ऊँचा, महान् विचार या लक्ष्य हो तो वह सांसारिक क्षेत्रों में विचरण नहीं करेगा। सर्वव्यापी चैतन्य ब्रह्मा के चिन्तन में जब "मन" ध्यानस्थ होता है तभी सफलतापूर्वक विषयों से विरक्त हो पाता है। जब मन संसार के विषयों से विरक्त होकर अन्तर्मुखी होता है, तभी वह गुणातीत होकर परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास करता है। अपनी इन्द्रियों एवं चित्तवृत्तियों को संयम में रखकर जो अविचल रहता है। वह जीवात्मा सदैव कीर्ति को प्राप्त करता है। शुभ और अशुभ विचार मन में ही आते हैं। 'विचार' जो आत्मा और मन को प्रफुल्लित करते हैं, जैसे नदियाँ किनारों को तोड़कर मैदान में प्रवाहित होती हैं, वैसे ही मन बुरे विचारों को छोड़कर अच्छे विचारों को प्रवाहित करता है।-ऋग्वेद, काण्ड-1।

वेद कहते हैं कि मानव-जीवन आनन्दमय है। अच्छे विचारों से स्वयं ही जीवन में आनन्दाता आती है। मन की तरंग और चित्त की प्रवृत्तियों को पहचानकर 'मन' को पवित्र किया जा सकता है। पवित्र मन ही सबसे बड़ा तीर्थ है। "मन चंगा तो कटौती में गंगा"-रैदास के निर्मल हृदय से भक्ति ये दो शब्द अनायास ही निकल पड़े। 'मन' जिनका सुन्दर है उस घर में परमात्मा का वास होता है। "परमात्मा कल्याण द्वारा मन की बुराईयों के छिद्र भर देवें-" यजुर्वेद, 36/2

"निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपटछल छिद्र न भावा।"-रामायण।।

जो मानव निर्मल मन का होता है वही परमात्मा को पाता है। शुद्ध अन्तःकरण को परमात्मा को अर्पित करना ही "अनासक्त-योग" कहलाता है। "मन" समूहवाची है। "मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार' ये चारों अन्तःकरणों को मन स्वयं में समेटकर रखता है। योगी पुरुष के अन्तःकरण की वृत्तियों ही उसे परमज्योति परमात्मा को प्राप्त करने में समर्थ होती हैं। अन्तःकरण से उद्भावित परमात्मा ही उपासक पर नये-नये अनुग्रहों को बरसाता है। हे परमात्मा! आप मन के वेग से भी शीघ्रगामी हैं अर्थात् मन के पहुंचने से पहले ही सर्वस्व विद्यमान रहते हैं। वेद में परमात्मा के गुणकीर्तन से मन समाहित हो कुटिलताओं से लोहा लेने के लिए ऐसा कठोर हो जाता है जैसा की वज्र। समाहित मन बलवान् व अडिग बन जाता है। यम-नियम इत्यादि योग के साधनों से समाहित मन से शरीर की प्रत्येक नाड़ी में वीर्य का आधान होता है, वीर पुरुष इसी तरह बलवान् होते हैं। प्राण-अपानकी गति को नियन्त्रित कर, एकाग्रता के अभ्यास से मन को दुर्भावनाओं के घेराव किये जाने से बचाना अनिवार्य है। सद्भावनाओं

से ओत-प्रोत मन: शक्ति अमर प्रतीत होती है। यही उसका वास्तविक स्वरूप है।

"मनोजवा अयमान आयसीमतरत्पुरम्।
दिवं सुपर्णो गत्वाय सोमं वज्रिण आमरत्॥"

- ऋग्वेद, मंडल-8, सूक्त-100, मन्त्र-8॥

पदार्थ:- "मन के तुल्य वेगवान, आगे बढ़ता हुआ शुभगति युक्त लोहे के जैसे अति कठोर तत्वों से बनी इस पुरी (मानव-शरीर) को पार कर जाता है। पुनश्च दिव्यता को प्राप्त हो वह वीर्यवान् इन्द्र हेतु सुख को लाता है।"

भावार्थ:- 'मानव-शरीर को 'पुरी' कहा गया है। 'आयसी' दुग्प्रवेश्य इसमें प्रवेश का तात्पर्य है भली-भांति समझना। इसको समझकर ही जीवात्मा परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है। 'सुपर्ण' का एक अर्थ ज्ञानवान् है। ज्ञानवान चेतन साधक इस पुरी को भली-भाँति जानकर दिव्यता पाकर जीवात्मा को दिव्य सुख प्रदान करता है। शुद्ध मन से अधर्म को त्याग धर्म के आचरण करने की अत्यन्त प्रशंसा हुई है। धर्मानुकूल आचरण करने से आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। धर्मानुकूल आचरण करने से आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह मन की शान्ति का प्रतीक है। जो पुरुष काचिक, वाचिक और मानस तीनों प्रकार के शुद्धभाव से ओत-प्रोत तथा सत्यवादी रहते हैं अनेक सामने कोई असत्यवादी ठहर नहीं सकता। वे ही माननीय एवं महात्मा होते हैं। केनोपनिषद के अनुसार 'मन' सत्य की ओर आकर्षित अवश्य होता है, परन्तु जबतक मन में नाना प्रकार के विकार भरे पड़े हों, तब तक उसे सत्य की ओर ले जाना असम्भव हो जाता है। वैसे मन को सत्य की ओर ले जाना आज के वैज्ञानिक ढंग से इलैक्ट्रोन और प्रोटोन (परमाणु एवं सूक्ष्माणु) है। इलैक्ट्रोन 'मन' है क्योंकि वह गतिशील है, प्रोटोन 'सत्य' है क्योंकि वह स्थायी है। मन में नकारात्मक एवं सत्य में सकारात्मक शक्तियां हैं। प्रोटोन (सत्य) के चारों ओर इलैक्ट्रोन (मन) घूमता है। ऋतु अर्थात् सत्य व सृष्टि का आदि तत्व प्रोटोन है। प्रोटोन इलैक्ट्रोन को चुम्बकीय शक्ति से आकर्षित करता है। वेद में **"ऋतं च सत्यं चाभीद्धातपसोऽसोऽध्यजायत"**-ऋग्वेद, मण्डल-10, सूक्त-160, मन्त्र-1 में सृष्टि की उत्पत्ति बताई है। तात्पर्य यह है कि मन की गति तथा चेष्टाएँ असीम हैं, जिसे परमात्मा ही पूरा कर सकता है। 'मन' ही मानव के सभी दोषों को दूर करते हुए सदा गतिमान रहता है और मस्त हाथी के समान किसी के अधीन नहीं रहता। मन को अपनी सच्चाई पर सदा दृढ़ रहना चाहिए। मन स्वप्न और जाग्रत अवस्था में किसी भी समय तीव्र गति से दूर-दूर तक पहुंच जाता है। जो इच्छाएं, कामनाएँ, अपने विवेक बुद्धि-विचार आदि की वजह से जागृत अवस्था में मनुष्य पूर्ण नहीं कर पाता, उन्हें नींद में सोते समय स्वप्नावस्था में, लोक-लज्जा की अनुपस्थिति में, मन द्वारा दुराचरण, कुकर्म आदि के रूप में, तीव्रगति से कर बैठता है। यह तो मन की चंचल वृत्ति हुई। ज्ञान-पथ के साधकों का प्रारम्भिक लक्ष्य मन को स्थिर एवं एकाग्र करना होता है। स्थिर मन: शक्ति को समाधान भी कहा जाता है। स्थिर मन से परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है-चंचल मन से नहीं। मन के संकल्प शिव और अशिव दोनों होते हैं। मन द्वारा शिव तत्व में लीन हो जाना ही मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। शिव अर्थात् कल्याणकारी- **"तन्मे मन: शिव संकल्यमस्तु"**-यजुर्वेद में 38वें अध्याय के 1 से 6 तक के मन्त्र इसके प्रतीक भी हैं। भोगों से ग्लानि ही मुक्ति की राह होती है। यह सब मन के द्वारा ही सम्भव है। मन ही मोक्ष और बन्धन का कारण है। "जितं जगत् केन, मनो, येन,", जो मन पर संयम कर लेता है, वह संसार में सदा विजयी होता है। "हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें, दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें"-बड़ी अच्छी प्रार्थना है। बंगला के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय के मन के ऊपर बड़ा अच्छा विवरण दिया है:- आकर्षक प्रलोभन के आगे दुर्बल मन फिसल जाता है, झुक जाता है, किन्तु चरित्रवान् व्यक्ति उन्हें ठुकरा देता है, वासनाओं के तूफान के बीच भी अडिग रहता है। विषम परिस्थितियों में भी सुन्दर मन हारता नहीं और न कभी विषय वासनाओं से पराजित होता है अगर हम युवकों में व्यक्तिगत् चरित्र की पवित्रता पैदा कर सकें और उनके इस चरित्रबल को राष्ट्र-कल्याण की दिशा में मोड़ सकें तो यह देश की सर्वोत्तम सेवा होगी। मानव-समाज बहुत बिगड़ गया है भौतिक विलासिता एवं भौतिक

आनन्द ही सर्वस्व छा गया है। मानवीय मन में धन का विस्तार घर कर बैठा है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर मानव कुत्सित कर्म में ज्यादा प्रविष्ठ हो रहा है। मानव अगर स्वयं के मन की परिस्थितियों को नहीं सुधारेगा तो अन्धकाररूपी गर्त में गिरता चला जायेगा। वेदों के अनुकूल चलना जरूरी है। वेद ऐश्वर्य देकर भी शान्ति देता है। मानव जब सुकर्म में प्रवेश करता है तभी से परमात्मा को अपना स्वामी मानने लगता है। समाज-सुधार के लिए, बच्चों के मन और चरित्र को उज्जवल बनाने के लिए उनमें सुसंस्कार, दृढ़ संकल्प, सत्कार्य करने की भावना डालनी होगी, तभी वे प्रगति के पथर पर प्रशस्त होगें। संसार एक भयानक रणभूमि है। इसमें प्रतिक्षण अपने-अपने अस्तित्व हेतु प्रत्येक जीव संघर्ष कर रहा है। अच्छे कर्मों से मन का उत्थान एवं चरित्र-निर्माण अति आवश्यक है। मनुष्यता का एक ही लक्ष्य है-आध्यात्मिक अन्त:करण का निर्माण। समाज को ज्ञान-विज्ञान देकर धर्म में लगाना व सुधारना एक महान् प्रयास है।

ज्ञान मन से उत्पन्न होता है। ज्ञान का लक्ष्य है निर्माण, कल्याण और उत्थान। 'वेद' का अर्थ भी ज्ञान है। ज्ञान हमारा नेतृत्व करे और विज्ञान हमारी सुख-सुविधा का कारण होवे तो हम ऐहिक तथा पारलौकिक आनन्द और शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा! हमारे 'मन' को अपने प्रकाशित स्वरूप में लगाओ। शुभ-संकल्पों के मन में उत्पन्न हो जाने से परमात्मा इन्द्रियों से आनन्द देने के लिए स्वयं को प्रकाशित करता है। मन ही इन्द्रियों का स्वामी है। मनरूपी सूर्य की इन्द्रियाँ किरणें हैं। मानव के सोते समय मनरूपी सूर्य की किरणें अस्त हो जाती है। सामवेद, मन्त्र-16 के अनुसार-

''मनुष्य श्रद्धा से परमात्मा का ध्यान करते हुए बुद्धि को प्राप्त हो-इसलिए सूर्य किरणों के साथ परमेश्वर को हृदय में विराजित करें। मन्त्र में यह सुझाया है कि परमात्मा की उपासना से बुद्धि बढ़ती है। जिससे मिथ्याज्ञान निवृत होता है। मिथ्याज्ञान की निवृत्ति से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। ''मनसा'' पद इसलिए है कि 'मन' से, श्रद्धा से उपासना करे न कि दिखाने के लिए दम्भमात्र। जो 'मन' से परमात्मा का ध्यान करता है वह हृदयकुण्ड में ज्योतिस्वरूप अग्नि-परमात्माको सुलगाता है।'' इस ज्योति से मनुष्य के मन में अज्ञान से उत्पन्न अन्धकारी रूपी बुरे विचार नष्ट हो जाते हैं और भक्त का मन शुभ और दिव्य हो जाता है। अच्छे विचार 'मन' को तृप्त करते हैं और मन पवित्र हो जाता है।

मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य दिव्य ज्योति परमात्मा को प्राप्त करना है। वेदवाक्यों द्वारा परमात्म-विषयक श्रवण किये हुए अर्थ को युक्तियों द्वारा मन से विचारने का नाम 'मनन' है-मनन को निश्चित बुद्धि द्वारा धारण करने को 'निदिध्यासन' कहते हैं। ''परमात्मा उपदेश करते हैं कि हे संसार के यात्री! तुम इस दिव्य रथ को मन से धारण करते हैं हे संसार के यात्री! तुम इस दिव्य रथ को मन से धारण करते हुए सर्वत्र विचारो अर्थात् मन को दमन करते हुए इस रथ में इन्द्रियरूप बड़े बलवान घोड़े जुते हुए हैं जो मनरूप रासों को दृढ़ता से पकड़े बिना कदापि वशीभूत नहीं हो सकते, इसलिए तुम मनरूपी रासों को दृढ़ता से पकड़ो अर्थात् मन की चंचल वृत्तियों को स्थिर करो ताकि यह इन्द्रियरूप घोड़े इस शरीर रूपी रथ को विषम मार्ग में ले जाकर किसी गर्त में न गिराये।''

ऋग्वेद, मंडल-7, सूक्त-66, मन्त्र-2 एवं कठोपनिषद् 9-2-3 में भी। अपने सदाचारों से सम्पूर्ण दुराचारों को त्यागकर, सारथीरूपी बुद्धि से, मनरूपी रासों से अमृतपान करते हुए, रथी जीवात्मा को धर्म की अन्तिम सीमा पर पहुँचाकर परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार संस्कृत आत्मा द्वारा संसार की यात्रा करने से सब मार्ग सुगम हो जावेगे। विद्वान अपने मन की विचार शक्ति द्वारा हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं। 'मन' 33 देव में एकादश इन्द्रियों में से एक है। परमात्मा जब इन देवों पर कृपा करते हैं तभी इनको प्रकाश मिलता है-इस कारण भी वह वन्दनीय देव है।

नियमित दिनचर्या, सात्विक आहार, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, दुर्बल मन: शक्ति को मजबूत बनाता है। खाने-पीने के उपयोग में आने वाले पदार्थों का सात्विक, राजसी एवं तामसिक प्रभाव, शरीर, मन एवं आत्मा पर पड़ता है। 'मन' अन्नमय है। इसकी उत्पत्ति के लिए मेध निमित्त है। अगर अन्न सुन्दरता से न बनाया गया हो तो उसे ग्रहण करके मन आनन्दित नहीं होता

जिससे परमात्मा का स्मरण भी ठीक से नहीं हो पाता। अन्न व भोजन से 'मन' प्रफुल्लित होता है तो मानसिक तनाव भी कम होता है जिससे मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। स्वस्थ मन में दूसरे के सुख की एवं हित की कामना रहती है। मानसिक रोगी का मन विभिन्न दिशाओं में भ्रान्तिवश भटक जाता है। वह क्षण-क्षण में बातों को बदलता है। कभी भूतकाल तो कभी भविष्यकाल के बारे में बोलता रहता है। ऐसे मानसिक रोगी को उचित आश्वासन प्रदान कर विविध उपचारों से शान्त व स्वस्थ किया जाना अपेक्षित है। स्वच्छ अन्त:करण में ही परमात्मा होते हैं-इसी का नाम सुखदायी स्थिति (स्वर्ग) है। किसी की प्रशंसा सुनकर ईर्ष्या न हो तो उसका मन स्वस्थ है, चरित्र अच्छा है, उसमें सज्जनता है। दुर्बद्धि वाले द्वेषी व्यक्ति से हम सदैव दूर ही रहें। **''योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्मे दध्मः''** अर्थात् जो अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण-रूपी मुख के बीच दग्ध कर देते हैं। परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना भी है। मन के राग-द्वेष समाप्त हों जाते हैं जिनसे पाप से मुक्ति प्राप्त होती है। मन को पापरहित होना चाहिए।

पुरूषस्य मन एवं ब्रह्मा (कौ. 17-7) कौषीतकि ब्राह्मण के अनुसार पुरुष का 'मन ही ब्रह्मा' है। मानव का एकमात्र स्तुत्य (इन्द्र) परमेश्वर है। हम शास्त्र-वचन से परमात्मा के न केवल गुनगान करें अपितु उनका 'मनन' करना भी जरूरी है। शतपथ (1.5.1.29) में 'मन' को अध्वर्यु कहा गया है। जीवन-यज्ञ के 'होता' आत्मा का यह एक सहायक 'ऋत्विक' ही है। यज्ञ की वेदी के स्थान पर वेद-रचना तथा अन्य सामग्री जुटाना अध्वर्यु का ही काम है। जीवन-यज्ञ की साधक सामग्री 'प्राणशक्ति' को जुटाना 'मन' का काम है। प्राणशक्ति युक्त सुदृढ़ मन ही जीवात्मा की शत्रुभूत दुर्भावनाओं को रूलाकर भगाने में समर्थ बना पाता है। स्वार्थ-त्याग पदार्थ के लिए प्रयत्न करना ही 'महायज्ञ' होता है। यज्ञ से 'इदन्न मम' अर्थात् (सब तेरा है मेरा कुछ नहीं) की भावना आती है, जिससे 'मन' को शान्ति प्राप्त होती है। भगवद् गीता में 5 प्रकार के यज्ञ का वर्णन मिलता है:-मानस ज्ञान-यज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, द्रव्य-यज्ञ, दान-यज्ञ, जप-यज्ञ, तप-यज्ञ, देव-यज्ञ एवं पंच महायज्ञ है। सभी यज्ञ किसी न किसी रूप में मानव-मन को शान्ति प्रदान करते हैं। दान और त्याग की भावना से मन उन्नत होता है। मनुष्यता के 'तप' से मन भी तपे तो परमात्मा आते हैं। ऐसा भाव **'तेन त्यक्तेन भुंजीथा'** यजुर्वेद, अध्याय-40, मन्त्र-1, अर्थात् सब कुछ परमात्मा का ही तो है-ऐसी त्यागपूर्ण भावना से 'मन' में शान्ति ही शान्ति होती है।

'मन' बड़ा चंचल और प्रमथन स्वभाव वाला है, बड़ा दृढ़ और बलवान है, इसलिए उसका वश में करना वायु की भांति अति दुष्कर है। परन्तु दुष्कर प्रकृति के मन को भी अगर बारम्बार अभ्यास द्वारा वश में किया जा सकता है तो ऐसे ही प्रयत्नशील मनुष्यों द्वारा मन को वश में कर योग को प्राप्त करना सहज हो जाता है। योग द्वारा परमात्मा का भी साक्षात्कार संभव है, क्योंकि अच्छी तरह शान्त अन्त:करण वाला सावधान एवं भयरहित पुरुष ही मन को वश में कर परमात्मा के परायण स्थित होता है। मन को एकाग्र कर, मन द्वारा इन्द्रियों को वश में कर, दृढ़ निश्चय वाला, कर्मफलों के त्याग द्वारा परमात्मा में स्वयं को अर्पण करने वाला, परमात्मा के स्वरूप का मनन करने वाला मानव ही श्रेष्ठ होता है। जो ज्ञानद्वारा, पाप रहित आसक्ति को त्यागकर अन्त:करण की शुद्धि के लिए कर्म करते हैं, वे ही निष्काम कर्मयोगी कहलाते हैं एवं परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

मानव मनः शक्ति अपरम्पार है। मानव सभ्यता और संस्कृति में आने वाले नए-नए परिवर्तन मन की चाहत से ही सम्भव है। ऋग्वेद के अन्त में, मंडल-10, सूक्त-161, मन्त्र-2, 3,4, 'मन' की समानता के लिए परमात्मा की आज्ञा है। पूरे विश्व में 'एक ही मन' है' यह अनुभूति मानव को अपना जीवन सार्थक बनाने में सहायक होती है। मानव, मन की सम्पूर्ण-कामनाओं का जिस समय त्याग कर देता है, आत्मा में आत्मा को अनुभव करता है, प्रिय-अप्रिय में समत्वभाव रखता है, उस समय उसे शीघ्र ही परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है।

-16 सी सरत बोझ रोड, कोलकाता-700020

कर्म फल व्यवस्था में कुछ मान्य भ्रान्तियों का शंका समाधान

- पं. उम्मेद सिंह विशारद, मो. 9411512019

18वीं शताब्दी में प्राचीन वैदिक ऋषियों की श्रेणी में हम एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती को पाते हैं। क्योंकि महर्षि दयानन्द जी से संसार को ईश्वरीय ऋत सत्य ज्ञान व विज्ञान से जोड़ने का मार्ग दिखाया। उन्होंने वेदों के रूढ़ी अर्थो पर प्रहार करके इतिहास परक अर्थों से छुड़ाकर ईश्वर परक अर्थ बताए। और वेदों के ईश्वर परक अर्थों से समाज में व्याप्त तमाम धार्मिक अन्धविश्वास सामाजिक, राजनैतिक, साम्प्रदायक मान्यताओं का उन्मूलन किया। यह भी सत्य है कि सदियों से तमाम अन्धविश्वासों की गहरी जड़े मानवों के संस्कारों में जम चुकी है। इनको निकालना इतना आसान नहीं है किन्तु मुश्किल भी नहीं है। आज के युग में बड़े से बड़ा राष्ट्र नेतृत्व वाला तथा धर्म गुरु या समाज सुधारक सत्य अध्यात्म ज्ञान के अभाव मं भटक रहे हैं और जब उच्च नेतृत्व ही अविज्ञान पथ पर चले तो जन साधारण की बात ही क्या कहें। आइए कुछ भ्रान्त मान्यताओं पर विचार करते हैं-

शंका समाधान संक्षिप्त में

प्रश्न: क्या हमें सुख दु:ख प्राप्त होते हैं यह पूर्ण जन्म के या इस जन्म के कर्मों के फल हैं?

उत्तर: मनुष्य को जन्म से मिश्रित फल प्राप्त हो किन्तु वर्तमान कर्मों के फल हमें सुख दु:ख रूप में इसी जन्म में मिलते हैं। तीनों प्रकार के सभी दु:ख आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक सुखों और दु:खों का पूर्वजन्मों के कर्मो। के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है किन्तु पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर कुछ गरीब के यहां जन्म लेते हैं कुछ धनाढ्य परिवारों में जन्म लेते हैं। यह सुविधा और असुविधा मिलना पूर्व जन्मों का फल है। विचारणीय है कि जीव के जन्म से पहले माता, पिता के पास उपलब्ध मार्गो व ज्ञान आदि के स्तर को ही उस जन्म लेने वाले जीव के पूर्व कर्मो से सम्बद्ध किया जा सकता है।

प्रश्न: क्या मान्यता ठीक है कि भाग्य को बदला जा सकता है या हर कोई किस्मत का खाता है?

उत्तर: इस प्रश्न पर अभी यह कहना है कि हम भाग्यवादी नहीं कर्मवादी बने। जीवन में कर्म प्रधान है और अच्छे व बुरे कर्म फल को हम भाग्य का फल अज्ञानता से कहते हैं।

जब भाग्य पूर्व निश्चित ही नहीं, अर्थात् इस जन्म में मिलने वाले सभी सुख व दु:ख जब पूर्व जन्मों के आधार पर निश्चित नहीं तो पुरुषार्थ करके सदाचार द्वारा अपने सुखों को बढ़ाया तथा दुराचार द्वारा अपने दु:खों को बढ़ाया जा सकता है। वेदों की शिक्षा में पुरुषार्थपर ही बल दिया गया है। कहा भी है मेरे दायें हाथ में पुरुषार्थ है और बांये हाथ में भाग्य है। केवल भाग्य के सहारे बैठने वाले व्यक्ति कभी सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न: समाज में भ्रूण हत्या करना क्या जन्म लेने वाले जीव के कर्मो का फल है।

उत्तर-जन्म लेने वाले जीव का कर्मफल नहीं है। क्योंकि भ्रूण हत्या माता-पिता के सहमति से उनकी स्वतन्त्रता के कारण हुई है, इसमें ईश्वर का कोई हस्ताक्षेप नहीं है। इस प्रकार दु:ख को अधिभौतिक दु:ख कहा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भ्रूण हत्या को ब्रह्महत्या की संज्ञा दी है। अत: भ्रूण हत्या कराने वाला करने वाला तथा सहमति देने वाला सभी इस अपराध के दोषी हैं।

प्रश्न: महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा मृत्यु पूर्व कहे शब्द, हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो का क्या अर्थ है।

उत्तर-महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के महा विद्वान थे यह जानते थे कि यह मुझे मारने का विरोधियों का षड्यन्त्र है और षड्यन्त्र करना उनका स्वतन्त्र कर्मकरने का कारण है, अत: षड्यन्त्र कारियों ने अपने कर्म की स्वतन्त्रता के कारण स्वामी जी को उनके रसोइये के माध्यम से कालकूट विष दूध में पिलवा दिया था, महर्षि दयानन्द जी उसी विष से महाप्रयाण कर गये थे, महान ईश्वर भक्त की अपने अन्तिम समय में परमात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धा थी जो इस प्रकार से व्यक्त हुई और स्वामी जी के अन्तिम

शब्द भी विचारणीय है कि तेरी इच्छा पूर्ण हो, आह! बहुत प्रसन्नता पूर्वक यह शब्द कहे गये है कि हे भगवन तेरे द्वारा जीवों के कल्याण के लिए लगा दिया था और इसी कल्याण की ईश्वरीय इच्छा के पूर्ण होने की प्रार्थना अन्तिम में कर गये थे।

प्रश्नः किसी दुर्घटना में कुछ व्यक्ति मर जाते है, कुछ बच जाते है, क्या बचने वाले की आयु शेष थी इसीलिए बच गये।

उत्तरः दुर्घटना में मरने वालों की न तो आयु समाप्त हुई थी और नही बचने वालों की आयु शेष थी, क्योंकि किसी की भी आयु पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर पूर्व निश्चित नहीं है। क्योंकि दुर्घटना में अलग-अलग व्यक्तियों की शारीरिक चोट लगने के कारण उनकी मृत्यु शारीरिक क्षमता पर निर्भर करती है। हर व्यक्ति पर लगने वाली चोट अलग-अलग होती है। इसमें किसी की किस्मत का निश्चित कोई हाथ नहीं होता है इसलिए दुर्घटना किसी भी समय कहीं पर भी हो सकती है, व व्यक्तियों की मृत्यु या चोट लगना दुर्घटना के प्रकार पर निर्भर करती है। अतः यह नहीं कहा जा सकता कि जिनकी मृत्यु हुई उनकी आयु समाप्त हो गयी थी और जो बच गये उनकी आयु शेष थी। ऐसा मानना मानसिक अन्धविश्वास है।

प्रश्नः क्या ज्योतिष गन्थों में फलित भविष्य वाणियां की जाती है वह झूठी होती है।

उत्तरः फलित ज्योतिष की भविष्य वाणियों व ग्रन्थ सभी कल्पना पर आधारित है वे झूठे हैं। तथा गणित ज्योतिष ग्रन्थ व उसकी भविष्य वाणियां ठीक हैं। गणित ज्योतिष में भुगोल में सूर्य, चन्द्र आदि की गति से सम्बन्धित ज्ञान विज्ञान है वही ही मात्र मानने योग्य है। शेष मानवों को भ्रमित करने वाला है।

प्रश्नः जो लोग वैदिक धर्म को नहीं मानते हैं और विभिन्न मतों में जाकर पूजा पाठ करते हैं और सुख शान्ति का अनुभव करते हैं क्या वह सुख शान्ति गलत है।

उत्तरः ईश्वरीय पूजा का सम्बन्ध आत्मा से है और आत्मा सत्य ज्ञान कर्म से ही सन्तुष्ट होती है जो ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य मतों में रहकर अन्ध पूजा करते हैं, वह उनके मन को तो वह सन्तुष्टी दे सकता है किन्तु सत्य विवेक और आत्म ज्ञान नहीं दे सकते हैं। उनको अपने लक्ष्य में जो सफलता मिलती है वह उनका पुरुषार्थ रहता है। सत्य ईश्वर की पूजा से केवल सत्य मार्ग मिलता है और कल्पित देवों की पूजा अर्चना से मनुष्य पाप, अत्याचार व अनैतिकता से नहीं बच सकता है।

प्रश्नः विभिन्न मतों के धर्मायार्य जो वेदों के प्रतिकूल असत्य धर्म का प्रचार कर रहे हैं क्या यह गलत है।

उत्तरः महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें सम्मुलास में लिखते हैं कि जो विद्यादि सद्गुणों में गुरुत्व नहीं है और ऐसा कहते और झूठ-झूठ कंठी तिलक वेद विरूद्ध मन्त्रोपदेश करते हैं, वे गुरु ही नहीं गड़रिये जैसे है। गड़रिये अपनी भेड़ बकरियों से दूध आदि का प्रयोजन सिद्ध करते हैं वैसे ही शिष्यों के चेले चेलियों के धन हर के अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं।

प्राक्कथन-ध्यानाकषर्ण

आज संसार में अधिकांश मानव जगत कल्पित अन्ध विश्वास व भ्रम व मतभेद में फंसे हुए है। उतना तो महाभारत काल से पूर्व में भी नहीं थे। वेद धर्म न मानने के कारण ही जन साधारण मूल सत्य विद्वान्तों को नहीं समझ पाते हैं। इसके लिए सत्य कर्म मीमांसा को समझना अनिवार्य है। मनुष्य का सवाभाविक लक्ष्य है सत्य धर्म, ईश्वर को मानना और ऋतुसत्य की ओर समाज को राह दिखाना सबसे उत्तम पुण्य है और असत्य, ईश्वर के गुण कर्मानुसार और सृष्टि कर्म के विरूद्ध जनता को भ्रमित करना सबसे बड़ा पाप है। इस लेख में हमने वर्तमान अन्ध कर्म मीमांसा का संकेत मात्र किया है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है समाज को सत्य मार्ग दिखाने की है।

श्रद्धेय पाठक जी आज विपरीत मान्यताओं के कारण ही मानव कर्म तथा कर्म फल के मूल सिद्धान्तों को समझ नहीं पाता है और उचित और अनुचित क्या है इसका निर्णय नहीं कर पाता। और मनुष्य की सत्यपुरुषार्थी शक्ति, पुरुषार्थ से कमाया हुआ धन और अमूल्य जीवन के मूल्यवान क्षण और ईश्वररीय सिद्धान्त व सृष्टिक्रम व धर्म के विपरीत मान्यताओं के कारण, यह जीवन और अगला जन्म दुःख दायी होता है।

नाल्पे सुखमस्ति

- प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

हम सब दुःखी हैं, अमीर भी दुःखी हैं, गरीब भी दुःखी हैं, शायद अमीर गरीबों से ज्यादा दुःखी हैं। गरीब तो दुःखी हैं ही क्योंकि उनका जीवन अभावग्रसत है। उनके पास रहने को मकान नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, खाने को अनाज नहीं। जब अमीर देखता है कि उसके पास एक मकान है, उसके पड़ोसी के पास दो मकान है, तो वह ईर्ष्या से जल उठता है, सोचता है उसके पास भी दो मकान क्यों नहीं? जब अमीर देखता है कि उसके पास पर्याप्त वस्त्र हैं पर उसके पड़ोसी की बीबी के पास मिक-कोट है तब उसका कलेजा जल उठता है। वह यही नहीं सोच सकता कि उसकी बीबी के पास भी मिंक-कोट हो, बल्कि धोखाधड़ी के उपाय भी सोचने लगता है कि कैसे इसे प्राप्त किया जा सकता है? जब अमीर देखता है कि उसके पड़ोसी के यहाँ रोज शराब की बोतलें उड़ती हैं तब वह भी सोचने लगता है कि पड़ोसी की अपेक्षा इतना अधिक धन कमा ले कि उसके यहाँ दिन-रात कॉकटेल पार्टियाँ होती रहें। अस्ल बात तो यह है कि हम गरीब इसलिए नहीं हैं कि हम वास्तविक अर्थों में गरीब है: हम गरीब इसलिए हैं क्योंकि अमीर होते हुए भी अपने को उनकी तुलना में गरीब ही समझते हैं।

अमीरी-गरीबी की बातें छोड़ दें, दुःख-सुख की यही बात है। हम सब तरह से सुखी हैं, परन्तु जब दूसरे को अपने से ज्यादा सुखी देखते हैं तब सुखी होते हुए भी दुःखी हो जाते हैं, अपने सुख को भी दुःख मानने लगते हैं-हाय, यह हमसे ज्यादा सुखी क्यों है? दुःखी को देखकर उसके प्रति सद्भावना नहीं होती, यही मन होता है कि भगवान् की हम पर कितनी कृपा है कि यह हससे ज्यादा दुःखी है। मैं एक बीमार को देखकर आ रहा था। वह शैयारूढ़ था, चल-फिर भी नहीं सकता था, देर से बीमार था, अब चला कि तब चला कि फिक्र हो रही थी।उसके एक मित्र मुझे उनके घर के बाहर मिले। वे भी लँगड़ाते चल रहे थे। इतना जबर्दस्त आर्थ राइसिटस था कि लाठी लेकर भी चलना मुश्किल हो रहा था। मुझसे पूछने लगे-हमारे दोस्त का क्या हाल है? मैंने कहा-अच्छा नहीं। झट से बोले, भगवान् कृपा करेंगे। परन्तु उनके दयाभाव से टपकता था कि उनके दोस्त चल बसें तो ठीक है। हम बाहर से दया दिखाते हैं, भीतर से निर्दयी होते हैं। इसलिए हमने कहा कि दुःखी दूसरे के दुःख को देखकर सुखी और सुख को देखकर दुःखी रहता है।

हम अमीरी चाहते हैं तो शिखर की, सुख चाहते हैं तो बेअन्त, बीच में रूकना हम नहीं जानते। बीच में रूकने का अर्थ है-'अल्प' में सन्तुष्ट हो जाना, जो कुछ मिला है उस तक को तो भगवान् की सिर्फ कृपा समझना। भगवान् ने जितना हमें दिया है उतना हमारे लिए काफी नहीं है-हमें और चाहिए और चाहिए, इसीलिए चोरियाँ होती हैं, डाके डालते हैं, लूट होती है, समाज का कड़ाहा हर समय उबलता रहता है। कोई टिककर, शान्तभाव से नहीं बैठता-अमीर भी, गरीब भी, सुखी भी, दुःखी भी। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। चैन, सुख-शान्ति से कोई नहीं बैठा। भौतिकवाद के तीन पक्ष है-पहला, दूसरा तथा तीसरा। ये तीन पक्ष क्या है?

भौतिकवाद का पहला पक्ष तो यह है कि व्यक्ति को थोड़े में सन्तोष नहीं होता, अधिक-से-अधिक की चाह बनी रहती है। जितना हमें मिले, उससे ज्यादा चाहिए। धन जितना मिलता है उससे ज्यादा की चाह बनी रहती हैं, सुख जितना मिलता है उससे ज्यादा की चाह बनी रहती है, इसके साथ ही हमें जितना मिलता है दूसरे को उससे कम मिले, धन हो या सुख हो, दोनों दूसरे को हमसे कम मिलें। इन दोनों बातों का एक ही अर्थ है। अपने को दूसरे से ज्यादा मिले, दूसरे को हमसे कम मिले।

भौतिकवाद का दूसरा पक्ष यह है कि यद्यपि मनुष्य अल्प से सन्तुष्ट नहीं होता, अधिक से अधिक ही चाहता है, तो भी जो भौतिक है वह अन्ततोगत्वा सदा अल्प हो जाता है। धन कितना भी हो, वह कहने को भले ही बेअन्त कहा जाय, परन्तु होता वह सान्त है, नपा-तुला है। ऐसा धन नहीं हो सकता जिसका कहीं खात्मा ही न हो। मैं जयपुर गया। वहाँ राजाओं के महल देखे, पुराने किले देखे। जब बने थे कितने महान, कितने विशाल थे! देखनेवालों की आँखें फट

जाती होगी। वहाँ राजा-रानियाँ रहती थीं। अब वहाँ जा सकना भी सम्भव नहीं है। आज वे अनन्त धन-राशि से बने महल तथा किले निरे मिट्टी हो गये हैं। उल्लू भी वहाँ नहीं बोलते। भौतिक सुख-दु:ख का भी यही हाल है। कोई भौतिक सुख चिरस्थायी नहीं है, कोई भौतिक दु:ख भी चिरस्थायी नहीं है।

भौतिकवाद का तीसरा पक्ष यह है कि इसमें हर बात की प्रतिक्रिया होती है। शराब पीते हैं, मजा आता है, फिर और पीते हैं, फिर लत पड़ जाती है, लत पड़ते-पड़ते शराब पीनेवाला शराब को नहीं पीता, शराब उसे पीने लगती है। यह शराब पीने की प्रतिक्रिया है। पहले चित्त उभरा था, अब प्रतिक्रिया के रूप में चित्त गिरने लगता है। सुख पाने के लिए हम चले थे, थोड़े सुख से तो सन्तोष नहीं होता-'नाल्पे सुखमस्ति'-'अल्प' सुख देने वाली वस्तु से तो पेट भरता नहीं और और की लालसा हमें सांसारिक भोगों में आगे-आगे धकेलती चलती है, और स्थिति वह आ पहुँचती है जिसमें जितना सुख हमें मिलता था वह तो मिलने से रहा, उलटा दु:ख सामने आ खड़ा हुआ। किसी को शराब पीने से दिल का दौरा पड़ने लगा, किसी ने जो-कुछ जोड़ा था वह लुटा दिया, कोई सड़कों या गलियो में भिखमंगों का-सा होकर जीवन से हाथ धो बैठा। भौतिकवाद की प्रतिक्रिया के समझने के लिए ऐलोपैथिक औषधियों की प्रतिक्रिया को समझ लेने से बात समझ पड़ जायेगी। नींद की गोली खाकर सौने की प्रतिक्रिया में कब्ज हो जायेगी। कब्ज के लिए दस्तावर दवा लेंगे तो कमजोरी हो जायेगी। दिनोंदिन अखबारों में पढ़ते हैं कि अमुक रोग की अमुक अचूक दवा, जिसके बिना ऐलोपैथिक इलाज चल ही नहीं सकता था, प्रतिक्रिया करने लगी है, अब वह दवा लेना हानिकर है। समय था जब विटामिनों के लिए कहा जाता था कि वे प्राण-प्रद हैं, अब उनके लिए भी कहा जाने लगा है कि इनकी भी प्रतिक्रिया होती है। भौतिक वाद का नियम ही प्रतिक्रिया है

भौतिकवादी जीवन में तीन बातों को स्मरण रखना चाहिए-पहली बात यह कि हममें और और की चाह सदा बनी रहती है, जितना मिलता है उससे अधिक की चाह के बने रहने से जीवन में से सन्तोष सदा के लिए विदा ले लेता है, दूसरी बात यह कि भौतिकवाद से जो मिलता है वह अन्त तक टिकनेवाला नहीं होता, समय आता है जब सब किया-कराया हाथ से निकल जाता है, तीसरी बात यह कि भौतिकवादी जीवन की हर बात की प्रतिक्रिया होती है, जिस बात के पीछे हम पड़े हैं वह हाथ तो आती है, परन्तु ठीक उससे उलटी वस्तु हाथ में रह जाती है।

तो फिर प्रश्न उठता है कि अगर भौतिकवाद में पूर्णता नहीं, सदात्व नहीं, प्रतिक्रिया है, तो वह कौन-सा रास्ता है जिसमें पूर्णता हो, सदात्व हो और जिसमें प्रतिक्रिया न हो? सन्तों का कहना है कि वह अध्यात्मवाद का रास्ता है।

अध्यात्मवाद का रास्ता क्या हे? यह समझ लेना कि अशान्ति बाहर नहीं है, हमारे मन में है, हमारे भीतर है, यही समझ लेना शान्ति का रास्ता है, यही अध्यात्म का रास्ता है। हम दूसरों से डाह करते हैं। हमें अशान्ति इसलिए नहीं कि हमारे पास किसी चीज की कमी है, हम अशान्त इसलिए रहते हैं कि दूसरों के पास हमसे अधिक क्यों है? हमारे पास एक मकान है, एक मोटर है, परन्तु हम इसलिए अशान्त रहते हैं क्योंकि दूसरे के पास दो मकान हैं, दो मोटरें हैं। बाह्य पदार्थों के साथ चिपट जाने से अशान्ति आती है, उनसे अपने को अलग कर लेने से शान्ति आती है क्योंकि शान्ति-अशान्ति का स्रोत भीतर है जो बाहर के शान्त-अशान्त संसार के साथ एकत्व-भाव से जुड़ा है। उससे अपने को काट लेने पर भीतर तो शान्ति का स्रोत ही बहता रह जाता है, उसमें तुलना नहीं, अपूर्णता नहीं, न्यूनाधिकता नहीं। न्यूनाधिकता बाहर की वस्तुओं में है, जो किसी के पास कम हैं, किसी के पास ज्यादा हैं। हमने इन बाह्य वस्तुओं के साथ अपनी एकात्मता बनाई हुई है यद्यपि वे उपकरण हैं, हमारे साधन हैं। जब हम इनसे साधन का काम नहीं लेते तब इनका होना-न-होना एक समान है। तभी तक आकांक्षा का विषय बनी रहती है जब तक वह हमारे उपयोग का साधन है। बड़े-से-बड़ा महल तभी तक मकान या महल है जब तक उसका कोई उपभोग करता है, जहाँ उसका उपभोग छूटा वह मट्टी से भी बदतर हो जाता है, मोटर तभी तक स्पृहणीय है जबतक वह हमारे यातायात का साधन है, अन्यथा गैराज में ही पड़ी रहनेवाली मोटर किस काम की? हम विषयशक्त हैं, विषय हमारे वश में नहीं, हम विषयों के वश में पड़े हुए हैं-इसीलिए अशान्ति है। इस गुर को समझ लेना ही

अध्यात्मवाद है। जैसे हमारा जीवन अशान्त है, इसी प्रकार के एक अशान्त व्यक्ति को एक सन्त ने पूछा-'तुम्हें क्या चाहिए? ऐसा वरदान दूंगा कि जो चाहोगे वह हो जायेगा। परन्तु शर्त एक रहेगी-जो तुम चाहोगे वह तो हो जायेगा। परन्तु शर्त एक रहेगी-जो तुम चाहोगे वह तो हो जायेगा, परन्तु तुम्हारे पड़ोसी के पास उससे दुगुना हो जायेगा। खैर, उसके पास अपना कोई मकान नहीं था, उसने चाहा कि उसका मकान बन जाये, मकान बन गया परन्तु उसके पड़ोसी के दो मकान बन गये। फिर उसने चाहा कि उसे मोटर मिल जाये, वह मिल गई, परन्तु उसके पड़ोसी को दो मोटरें मिल गई। यह देखकर उस व्यक्ति की अशान्ति इतनी बढ़ गई कि उसने माँगा कि उसके मकान में एक कुआँ खुद जाय ताकि उसके पड़ोसी के मकान में दो कुएँ खुद जायें। तब जाकर उसे कुछ राहत मिली क्योंकि उसने देखा कि उसके पड़ोसी के मकान में दो कुओं के कारण चलने-फिरने की जगह भी न रही।

हमारे भीतर संसार भरा हुआ है-संसार की हर वस्तु, हर वस्तु की लालसा। जब तक इस लालसा को निकाल नहीं दिया जायेगा तबतक शान्ति भीतर प्रवेश नहीं कर सकती, क्योंकि अशान्ति का मूल कारण लालसा है। यही हमारे जीवन की बेचैनी का कारण है। अगर घड़े में भूसा भरा हुआ हो, और हमने उसमें पानी भरना होतो भूसे को निकाल बाहर फेकना होगा। पहले भूसा निकलेगा, तब पानी भरेगा, पहले पानी भरे तब भूसा निकले-ऐसा नहीं होगा। अध्यात्म का तरीका यही है कि मनुष्य ध्यान में बैंठे, संसारी बातें याद आयेंगी, परन्तु अगर घड़े के भीतर पानी डालते चले जायें तो भूसा अपने आप निकलता चला जायेगा और घड़ा भूसे से खाली होकर पानी से भर जायेगा। साँप टेढ़ा चलता है, परन्तु अपने बिल में प्रवेश करते समय सीधा होकर जाता है। इसी तरह मनुष्य संसार के विषयों में फंसा-फंसा कुटिलता, दगा-फरेब बरतता है, परन्तु जब उसे अध्यात्म की लगन लग जाती है तब कुटिलाता छोड़ देता है क्योंकि भगवान् का ध्यान ही उसका घर है। हमारी हालत यह है कि हम विषयों की तरफ अन्धाधुन्ध भागे चले जा रहे हैं। इसका अन्त क्या होगा-इसे कोई सोचता। जैसे कोई चोर-चोर कहकर भागने लगे तो सब चोर-चोर कहकर भागने लगते हैं, जिन्होंने चोर को देखा नहीं वे भी चोर-चोर कहकर भागने लगते हैं, वैसे हम भी संसार के विषयों के प्रति अन्धाधुन्ध भाग रहे हैं क्योंकि दुनिया के सब लोग विषयों की तरफ भाग रहे हैं और सारा जीवन इसी भाग-दौड़ में बिता देते हैं। अन्त समय में हम देखते है कि हाथ कुछ लगा नहीं, सारी दौड़ बेकार थी। उस समय बन्धु-बान्धव, स्त्री, पुत्र-कलत्र भी थककर चाहने लगते है कि यह हमसे जल्दी से जल्दी विदा हो। अध्यात्म का अर्थ है-जीवन के इस अन्त को देख लेना।

एक साधु के पास एक व्यक्ति गया और हाथ दिखाकर कहने लगा-मेरा हाथ देखिये, मेरे भाग्य में क्या लिखा है? साधु ने कहा-मैं हाथ देखना नहीं जानता। परन्तु वह व्यक्ति तो साधु के पीछे पड़ गया-यह कैसे हो सकता है कि इतने बड़े महात्मा होकर आप हस्त-रेखाओं के फल को न जानते हों? साधु ने जब छुटकारा न देखा तब उसके गले में एक तागा बांध दिया और कहा कि जब यह तागा टूट जायेगा तब तुम्हारी मृत्यु होगी। अब वह रोज सवेरे उठकर गले का तागा देख लेता और समझता कि जिन्दा हूँ। एक दिन अचानक तागा टूट गया। अब वह पड़े-पड़े चिल्लाने लगा कि मैं मर गया हूँ। लोग हंसते, परन्तु वह चिल्लाता कि मैं मरा पड़ा हूँ, मुझे कोई उठाने नहीं आया। हमारा यह शरीर एक तागा है। जब यह टूट जाता है, हम समझते हैं-हम मर गये, परन्तु शास्त्रों का कथन है कि हम मरते नहीं, मरता यह शरीर है, टूटता यह तागा है, आत्मा अमर है, चिन्ता करनी हो तो उसकी करो जो सम्पूर्ण है, अमर है, अनादि है, अनन्त है-यही अध्यात्मवाद है, इसीसे शान्ति मिल सकती है क्योंकि अध्यात्म में जो शान्ति मिलती है वह अल्प नहीं, अनल्प है, वही 'भूमा' है-**'यो वै भूमा तत्सुखम्'।**

आज सब चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि चारों तरफ बढ़ोतरी हो रही है। हर बात में बढ़ोतरी है, उन्नति है, परन्तु क्या यह बात भी ठीक नहीं कि अशान्ति, असन्तोष, ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़े में भी बढ़ोतरी हो रही है? शान्ति की तलाश में हर व्यक्ति अशान्त है, सुख की तलाश में हर व्यक्ति दुःखी है, सब-कुछ पा लेने की तलाश में हर व्यक्ति सब-कुछ खो बैठा है।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
74. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
76. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़

घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना कल

-अर्जुनदेव चड्डा

माता-पिता जो अपनी युवावस्था में अपने बच्चों को सुनहरे भविष्य के लिए स्वयं को भूल कर, जी तोड़ मेहनत कर उन्हें सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं। उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाते हैं और उच्च शिक्षा के पश्चात् वे सन्तानें विदेशों में अथवा देश के महानगरों या बड़े-बड़े शहरों में नौकरी, रोजगार मिल जाने पर उन्हीं माता-पिता को घर पर अकेला छोड़ देते हैं, हताशएवं एकाकी जीवन जीने के लिए। जिनकी पथराई आंखें हमेशा उनका इंतजार करती रहती हैं।

इसी प्रकार बड़े अरमानों के साथ बेटे का विवाह कर माता-पिता जिस बहू को डोली में बैठाकर लाते हैं। विवाह के कुछ समय बाद वे बेटा-बहू अपनी निजी जिन्दगी में सब कुछ भुलाकर इतना रम जाते हैं कि घर के बुजुर्ग माता-पिता उन्हें भार लगने लगते हैं और फलस्वरूप या तो वे माता-पिता को छोड़कर अलग चले जाते हैं और या फिर उन्हें घर से निकल जाने को मजबूर कर देते हैं।

अति आधुनिक सोच के कारण अतिशिक्षित युवा जिनके घर में वृद्ध माता-पिता हैं, हमेशा अपने पुत्र-पुत्रियों को प्रतिपल चलो होमवर्क करो, इनसे क्या सीखोगे, ये पुराने लोग हैं, अपना काम करो, इत्यादि बातों द्वरा अपने-अपने माता-पिता को हतोत्साहित तथा उनकी उपेक्षा करते नजर आते हैं।

एक ओर सर्वाधिक घातक प्रवृति कि जब तक माता-पिता या बुजुर्ग कमाते हैं, घर का कार्य करने में समर्थ हैं, तब तक उनकी बड़ी आवभगत, मान-सम्मान एवं देखभाल और ज्यों ही वे वृद्ध सेवानिवृत अर्थात् कार्य करने में असमर्थ हुए नहीं कि वे माता-पिता सन्तानों को पर्वत से अधिक भारी लगते हैं। फलस्वरूप प्रारम्भ होता है तानों, उलाहनों के माध्यम से प्रतिदिन का अपमान और उनकी सुविधाओं में कटौती का खतरनाक सिलसिला। जिससे उनका जीवन नारकीय बन जाता है।

ये चन्द वे उदाहरण मात्र हैं जो आज के दौर में हमें अपने चारों ओर वृद्धों के साथ देखने को मिलते हैं। आज के इस भौतिकवादी, आधुनिक बाजारवाद के आधार पर विकसित भोगवादी समाज में मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक परिस्थितियों पर सर्वाधिक कुठाराघात किया है जिसकी सर्वाधिक मार घर परिवार के बुजुर्गों को सहनी पड़ रही है।

आज अधिकांश घरों में बूढ़े माता-पिता, दादा-दादी को अकेले में अवसादित जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है। आधुनिक सुख-सुविधाओं की चाह, स्वतन्त्र जीवन जीने की प्रवृत्ति ने समाज की अमूल्य धरोहर बुजुर्गों को सब कुछ होते हुए भी अनुपयोगी वस्तु (कबाड़) के समान घर में चुपचाप रहने को मजबूर कर दिया है या फिर आवाज उठाने पर घर से बाहर वृद्धाश्रमों का रास्ता दिखा दिया है।

घर या वृद्धाश्रमों में एकाकी रह रहे ये बुजुर्ग शिकार हैं अपनों की उस आधुनिक भौतिकवादी सोच का जो उन्हें समाज में एक अनुपयोगी तत्व मानती हैं। अपने विकास में बाधक समझती है। वे भूल जाते हैं कि वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की एक अवश्यम्भावी प्रवृत्ति है। प्रत्येक को इस स्थिति से गुजरना पड़ेगा। यदि आज का बुजुर्ग दुर्व्यवस्था का शिकार है तो सत्य मानिये वर्तमान के युवा का भविष्य अंधकारमय है।

वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी मानवीय संवेदनहीनता का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक रिसर्चों ने भी स्पष्ट किया है कि 80 प्रतिशत से भी अधिक वृद्ध वृद्धाश्रम के जीवन से संतुष्ट नहीं होते हैं। पोते-पोती, बेटा-बहू, घर-परिवार के प्रति हार्दिक लगाव उन्हें निरन्तर बेचैनी देता है।

बुजुर्गो को उपेक्षा नहीं सम्मान चाहिए-ये वृद्ध परिवार से धन-दौलत या भौतिक सुविधाओं की चाह नहीं रखते हैं, केवल सम्मान चाहते हैं, इनकी चाह इतनी सी है कि उन्हें अपनों का प्यार मिले। परिवार उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करें। तानों, उलाहनों से अपमानित वचनों से मुक्ति मिले। उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं किया जाये।

समझे परिवार की अवधारणा-बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन के पीछे परिवार की अवधारणा को ठीक ढंग से नहीं समझ पाना भी एक बड़ा कारण है। आधुनिक पारिवारिक अवधारणा में परिवार नाम केवल पति-पत्नी

और उनके बच्चों का है। इसी कारण बेटा, बहू द्वारा जीवन में वृद्ध माता-पिता, सास-ससुर उपेक्षित कर दिए जाते हैं। जबकि परिवार की प्राचीन अवधारणा में पति-पत्नी एवं उनके बच्चों के अतिरिक्त माता-पिता, बुजुर्ग, दादा-दादी का भी समावेश है।

आज आवश्यकता है उस पुरातन धारण को समझने की। इसे अपनाकर जब परिवार के अभिन्न अंग के रूप में बुजुर्गों को स्वीकार करने लगेंगे तो स्वत: ही इनके प्रति आपके मन में प्रेम स्नेह एवं सम्मान की भावना जन्म लेने लगेगी और वे उपेक्षित बुजुर्ग अपने बन जायेंगे।

संस्कारों के संवाहक हैं बुजुर्ग-घर, परिवार, समाज, राज्य के समृद्धिपूर्ण तथा मानव जीवन निर्माण में संस्कार का बड़ा महत्व होता है। बुजुर्ग ही वे होते हैं जो संस्कार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। यदि वे उपेक्षित हैं तो जानिये समाज का नैतिक विकास उपेक्षित है। स्वतन्त्रता अधिकार तो वृद्धों की सेवा कर्त्तव्य है-प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रता चाहता है, अधिकार चाहता है और युवा दम्पत्ति अपने पारिवारिक जीवन में इसी स्वतन्त्रता के नाम पर बुजुर्गों की अवहेलना करते हैं, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का नाम स्वतन्त्रता नहीं है। उन्मुक्त जीवन विनाश की ओर ले जाता है। घर परिवार से वृद्धों की उपेक्षा का परिणाम है कि आज नवविवाहितों एवं अति शिक्षितों के बीच विवाह विच्छेद की संख्या बढ़ती जा रही है, अत: स्वतन्त्रता के साथ घर में बुजुर्गों के महत्व को समझें उनकी सेवा आपका कर्त्तव्य पालन है।

अनुभव का खजाना है वृद्धावस्था:- आज समाज में वृद्धों को अनुपयोगी मानने की घातक प्रवृत्ति बढ़ रही है। हम कम्प्यूटर, इंटरनेट से अर्जित ज्ञान को ही सर्वोच्च समझते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है कि ये आधुनिक उपकरण आपको नॉलेज तो दे सकते हैं, अनुभव नहीं। जीवन केवल नॉलेज के आधार पर नहीं जिया जा सकता है। इसे जीने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है और ये अनुभव मिलता है बुजुर्गों से। क्योंकि उनके पास जीवनभर का अनुभव होता है तो आपके लिए सदैव उपयोगी है। इतिहास में अनेकों ऐसी कथाएं है जो ये बतलाती हैं कि बुजुर्गों के अनुभव किस प्रकार उपयोगी हैं। वृद्धावस्था अनुभवों का इन्साइक्लोपीडिया होती है। इसका फायदा स्वयं उठायें और अपने बच्चों को उठाने दें।

विरासत को न भूलें:- आधुनिकता विरासत को भूलने का नाम नहीं हमारी परम्परा एवं संस्कृति में वृद्धों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है उनके सम्मान सेवा की बात कही गई है। भारतीय परम्परा में पितृपूजा एवं पित्रेष्टि जैसे यज्ञों का विधान मिलता है जो माता-पिता एवं वृद्धों के प्रति कर्त्तव्यों का ज्ञापन है। शास्त्रों में कहा गया है कि नित्य प्रति माता-पिता एवं वृद्धों की सेवा एवं सम्मान करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, यश एवं बल ये चार वस्तुएँ नित्य प्रतिदिन बढ़ती है। मानव विधान के प्रथम निर्माता महर्षि मनु ने तो स्पष्ट लिखा है कि दुखित होकर भी माता-पिता का अपमान नहीं करना चाहिए। इसलिए हमेशा उनका सम्मान करें।

वृद्धावस्था जीवन का वह काल है जिससे एक दिन प्रत्येक युवा को रूबरू होना पड़ेगा। किसी शायर ने कहा है कि जाकर न आने वाली जवानी देखी और आकर न जाने वाला बुढ़ापा देखा। इसलिए यदि आज आप वृद्धों को जैसा व्यवहार या महत्व देंगे उनका सम्मान करेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रखेंगे तो मानिये आप अपना कल सुधार रहे हैं। यदि आप आपके किशोर पुत्र-पुत्रियाँ भी आपकी उपेक्षा करेंगे। हम मनुष्य हैं, केवल मेडिक्लेम पॉलिसी, इंश्योरेंस और पेंशन फण्ड से वृद्धावस्था नहीं गुजारी जा सकती। मानवीय संवेदनाओं की जितना आवश्यकता जीवन की अन्य अवस्थाओं में होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में होती है। याद रखें वे केवल प्रेम, स्नेह, सम्मान चाहते हैं। अत: अपने कल को बेहतर रखने के लिए आज वृद्धों को अपनाएँ उन्हें सम्मान दें सेवा करें।

-जिला प्रधान, 4-प-28, विज्ञान,
नगर कोटा (राजस्थान)

❑ आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - **विक्रम देव आर्य**

सर्दी का मेवा: खजूर

खजूर में शर्करा होती है, वह सूर्य किरणों से पका हुआ सुपाच्य आहार है, यह शरीर में शीघ्र पच जाता है। शरीर को हष्ट-पुष्ट करने के लिए खजूर एक अच्छा फल है। खजूर हृदय के लिए शीतल, प्रिय, तृप्तिकारक गुर, मधुर, कफ, वातनाशक है। आयुर्वेद का मानना हैं कि खजूर हृदय को असीम शक्ति प्रदान करता है। पूरे शरीर में होने वाली जलन को भी यह दूर करता है। -अभय कुमार जैन

खजूर जाड़े के मौसम में हर जगह मिलता है। यह उष्ण जलवायु और मरूस्थलीय प्रदेशों का फल है। देश में उपलब्ध खजूर प्राय: आयातित ही होता है। गुणवत्ता, आहार और आर्द्रताके कारण इस फल को, भूमि खजूरिका, पिंड खजूर, छुहारा, सुलेमानी आदि नामों से संबोधित किया जाता है। खजूरी के पूर्ण रूप से पके हुए गीले फलों को खजूर और अधपके सूख फलों को छुआरे के नाम से जाना जाता है। खजूर, पेड़ पर पकने वाला एक उत्तम पौष्टिक प्राकृतिक आहार है, खजूर में जो मिठास है, वह बच्चों, बड़ों, बूढ़ों सभी को स्वादिश्ट लगती है, खजूर में शर्करा होती है, वह सूर्य किरणों से पका हुआ सुपाच्य आहार है। यह शरीर में शीघ्र पच जाता है। शरीर को हष्ट-पुष्ट करने के लिए खजूर एक अच्छा फल है।

प्रति 100 ग्राम खजूर में निम्न तत्व पाए जाते हैं: कैलोरी 365, प्रोटीन 5 ग्राम, शर्करा 50 ग्राम, कैल्शियम 10 मि.ग्राम, चिकनाई 16 ग्राम, आयरन 05 मि.ग्रा. तथा फास्फोरस 50 मिली ग्राम पोषक तत्वों से भरपूर खजूर के अनेकानेक औषधीय गुण, शारीरिक दुर्बलता, जीर्ण जवर, कोष्ठबद्धता में, यकृत प्लीहा की वृद्धि, दाद, कफ, नि:सारण, लकवे और फेफड़ों के रोगों में तथा खांसी आदि में आश्चर्यजनक लाभ देते हैं। हीमोग्लोबिन व लाल रक्त कणिकाओं की कमी वालों के लिए यह बहुत ही लाभदायक है। इसका उपयोग पाचनतन्त्र को मजबूत बनाता है, आँतों की माँसपेशियों को शक्ति प्रदान करता है और मल निष्कासन में सहायक होता है।

औषधीय उपयोग: कब्ज के रोगियों को पिंड खजूर दूध में उबालकर प्रात: एवं सायंकाल पीना चाहिए। कमर दर्द की शिकायत में पाँच खजूर उबालकर उसमें पाँच ग्राम मैथी डालकर पीएँ, आराम मिलेगा। खूनकी कमी दूर करने के लिए प्रात:काल दूध में 3-4 खजूर उबालकर पीएँ। खजूर के मौसम में प्रतिदिन 4-5 खजूर खाकर ऊपर से गर्म जल पीएँ, इससे कफ खाँसी और दमा का प्रभाव कम होता है। वात रोग में खजूर के साथ आधा चम्मच सौंठ पाउडर व घी डालकर दूध में उबालकर सेवन करें, लकवा और सीने में दर्द की शिकायत को दूर करने में भी खजूर सहायक होता है। छुआरा यानी सूखा खजूर आमाशय को बल प्रदान करता है। छुआरे को दूध में उबालकर पीने से शारीरिक दुर्बलता दूर होती है। छुआरे की तासीर गर्म होने से ठण्ड के दिनों में इनका सेवन नाड़ी के दर्द में भी आराम देता है। खजूर में कोलेस्ट्रोल बिल्कुल नहीं होता और फेट भी कम मात्रा में होता है। इसमें पोटेशियम काफी मात्रा में और सोडियम ना के बराबर होता है। इसलिए यह हार्ट का दोस्त और नर्वस सिस्टम को दुरूस्त रखने वाला माना जाता है।

खजूर में मौजूद ओर्गेसिक सल्पर कई बार एलर्जी और मौसमी इंफेक्शन आदि से बचाव करता है। यह कम्पाउंड बहुत कम फलों में मिलता है। सर्दी में 4-5 खजूर अच्छी प्रकार धोकर दूध में उबालें। यह दूध पीने से कफ पतला होकर बाहर निकलता है। फेफड़े साफ हो जाते हैं, सदी, खाँसी, जुकाम, दमा का असर कम हो जाता है।

पाचन शक्ति मजबूत करने के लिए खजूर खाना बहुत लाभप्रद है। बाद में छुहारे खाएँ, इनके सेवन से आमाशय को बल मिलता है। टीबी के रोगियों के लिए यह बहुत ही अच्छी औषधि है। दूध में उबालकर पीएँ, यह दुबले-पतले व्यक्तियों के लिए पौष्टिक आहार है।

कब्ज के रोगियों को चाहिए कि रात में खजूर भिगोकर रखें, सुबह पानी के साथ सेवन करें। इससे कब्ज से छुटकारा मिलता है क्योंकि इसमें फाइबर की प्रचुरता होती है। ताजे खजूर खून की कमी को पूरा करते हैं क्योंकि खजूर में लौह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

– तृप्ति बंदा रोड, भवानीमण्डी-326502

क्यों होते हैं बच्चे निराश...

-शशांक मिश्र 'भारती'...

सामान्यत: माता-पिता और अध्यापकों को कहते सुना व देख जाता है कि अमुक बच्चा कमजोर है। उसे कुछ नहीं आता सुस्त रहता है। अकेले गुमसुम बैठा रहता है जबकि वास्तविकता यह होती है कि बालक विभिन्न शारीरिक मानसिक कारणों-चोट लगना दुर्घटना अथवा बीमारी आदि से कभी-कभी अशक्त हो जाते हैं। अन्य समान आयु के बच्चों से कमजोर हो जाते हैं। परिवार के वातावरण के साथ-साथ विद्यालय सामाजिक परिवेश आदि का गलत प्रभाव ऐसे बच्चों में हीन भावना पैदा करता है। बालक की दुर्बलता-अशक्ता को ध्यानपूर्वक देखने व समझने के बाद निम्नलिखित कारण सामने आते हैं:-

- किसी दुर्घटना असावधानीवश बच्चे के मस्तिष्क में लगी चोट या हुई क्षति उसकी अशक्ता का कारण हो। इससे उसके बोलने की शक्ति क्षमता प्रभावित हो गई हो। इसलिए वह रूक-रूक कर बोलने व हकलाने लगा हो।
- सामान्य बुद्धि का अभाव अल्पता भी कभी-कभी बच्चों की अशक्ता उनकी कमजोरी का कारण बन जाती है, जिससे उनके समझने की शक्तिदुर्बल पड़ जाती है।
- यदि बालक की श्रवणशक्ति कम है अथवा उसकी श्रवणेन्द्रिय में कोई दोष है तब भी वह अशक्त हो जायेगा अन्य बालकों से विरल ही दृष्टिगोचर होगा।
- समुचित प्रोत्साहन न मिलना सदैव एकाकी रहना भी अशक्ता का कारण बन जाता है।
- माता-पिता व अन्य सम्बन्धियों द्वारा लगातार डांट-फटकार शान्त रहने को बार-बार कहने ये न करो वो न करो आदि से भी बालक निराश हो जाते हैं। संकोची स्वभाव उनके व्यक्तित्व की विशेषता बन जाती है।
- सामान्यत: बालक अपने से बड़ों माता-पिता के कार्यों को अनुसरण करता है। यदि उसके माता-पिता बलात आचरण करते हैं तो बच्चा भी निश्चय ही प्रभावित होगा। तुतलाकर हकलाकर अथवा बनकर बोलना झगड़ालू स्वभाव जैसी समस्यायें पैदा हो सकती हैं।
- कभी-भी माता-पिता व अन्य परिवार जनों द्वारा बालक की सामर्थ्य शक्ति व क्षमता से अधिक प्रगति की इच्छा रखना भी उसकी अशक्ता का कारण बन जाता है। अधिकांश ऐसा बड़े बच्चों के साथ होता है।
- सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश से निर्मित-कारण भी बच्चे की अशक्ता दुर्बलता के कारण बन जाते हैं न उच्चारण कर सकने वाले अक्षरों-शब्दों को जबरदस्ती रटाना इनमें से एक प्रमुख कारण है।
- असामान्य रूप से पड़ जाने वाली गलत आदतों से बच्चे कभी-कभी निराशा के शिकार हो जाते हैं।
- विद्यालय में होने वाला बालक के साथ उपेक्षा पूर्व व्यवहार अध्यापक की भेदभावपूर्ण नीति बालक की रूचि को अनदेखा करने से भी उसमें हीन भावना विकसित हो जाती है।
- बच्चों की अशक्ता का उसके परिवार व वातावरण से समस्याओं के सम्बन्ध में हमें प्राय: अपने पास-पड़ोस से अनुभव प्राप्त होते हैं। फिर माता बालक की पहली शिक्षिका है और परिवार उसकी प्रथम पाठशाला। माता-पिता जहां के साथ जहां वह विद्यालय के बाद युवावस्था तक अपना अधिकांश समय बिताता है ऐसी स्थिति में माता-पिता व उसके परिवार का बालक पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ना स्वभाविक है वह पारिवारिक वातावरण में ही पल-बढ़ कर बड़ा होता है जिसे कारण अधिकांश बालको की अभिरूचियों मन: स्थिति परिवार व उसके वातावरण से प्रभावित होती है। परिवार व वातावरण के प्रभाव उस पर मानसिक व शारीरिक दोनों रूपों से पड़ते हैं। परिवार में लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौज का माहौल जहां उसे झगड़ालू प्रवृत्ति की ओर धकेलता है वहीं प्रोत्साहन शान्ति,

प्रेम, सद्भाव का वातावरण समुचित विकास के पथ का प्रदीप सिद्ध होता है इसी प्रकार वातावरण की स्थितियां भी बालकपर अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव अपने कारकों व तत्वों द्वारा डालती हैं। अन्य सामाजिक व सांस्कृतिक पहलुओं के साथ-साथ उसकी बोलचाल आचार-विचार रहन-सहन को प्रभावित करती हैं। वातावरण का भौतिक पक्ष जहां बालक की शारीरिक बनावट कौशल, बोलचाल, लिंगभेद, रंगभेद, आयुभेद को प्रभावित करता है वहीं उसका सांस्कृतिक पक्ष आचरण वेश-भूषा भाषा-संस्कृति शब्द व्यापार के द्वारा अपना प्रभाव डालता है।

❑ चूंकि जन्म से मृत्यु पर्यन्त निरन्तर परिवार व वातावरण का परस्पर सम्बन्ध रहता है। इसलिए इनका प्रत्येक पहलू जन्मे वाले बालक को सकारात्मक व नकारात्मक रूप से समय-समय पर परिस्थितियों के अनुसार प्रभावित करता है तथा उसकी उन्नति व अवनति का कारण भी बनता है।

समस्या कोई भी हो समाधान खोज ही लिए जाते हैं। ऐसा ही निराश बालकों की समस्याओं के सन्दर्भ में कहा जा सकता है। सामान्यत: बालक की निराशा के कारण मुख्य रूप से उसके परिवार व वातावरण से सम्बन्धित हैं इसलिए सुझावों-सुधारों में भी इन्हीं तत्वों की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। यह तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। घर परिवार विद्यालय व वातावरण ऐसे पहलू हैं जिनसे बालक प्रगति का सर्वोच्च शिखर स्पर्श कर सकता है बशर्ते कि सभी का सहयोग सकारात्मक हो संघर्षपूर्ण अथवा नकारात्मक नहीं।

हम अशक्त बालकों की सहायता उनका सुधार सहयोग निम्नलिखित उपायों को अपनाकर कर सकते है:-

❑ अशक्त बालकों के माता-पिता को अपने व्यवहार में परिवर्तन लाकर उनकी समस्याओं को समझना चाहिए।

❑ ऐसे बालकों को अतिसुरक्षा की आवश्यकता होती है अत: उनके माता-पिता को उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर समय से पूरा करते रहना चाहिए और निजी सुरक्षा पर भी ध्यान रखें।

❑ परिवार के अन्य सामान्य बालकों से अशक्त बालक की कभी तुलना नहीं करनी चाहिए अपितु माता-पिता उसको साथ-साथ उठने-बैठने खेलने व कार्य करने को प्रोत्साहन देना चाहिए। परस्पर सहयोग का वातावरण बनाने का अवसर उपलब्ध करवायें।

❑ माता-पिता व उसके परिवारजनों द्वारा अशक्ता की स्थिति में बालक द्वारा की जा रही अनुचित मांगों की पूर्ति कदापि नहीं करनी चाहिए अन्यथा बालक यही समझेगा कि चीखने चिल्लाने व जिद करने से वह अपनी जो चाहे मांग पूरी करवा सकता है।

❑ कक्षा व विद्यालय में शिक्षकों को चाहिए कि उसके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करने के लिए बालकों को प्रोत्साहित करें। स्वयं भी सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर मित्रवत् व्यवहार रखें।

❑ उसके साथ सकारात्मक व्यवहार करने के लिए अन्य बालकों को प्रोत्साहित करें। स्वयं माता-पिता भी सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर मित्रवत् व्यवहार रखें।

दीवाली रंग लायेगी

- **वन्दना शास्त्री**, बी.एड. आर्य कन्या हाई स्कूल हॉसी, जिला हिसार (हरियाणा), मो. 9466850651

हृदयकी दूरियों को ये मिटा करके ही जायेगी।
दीवाली रंग लायेगी दीवाली रंग लायेगी।।
उदय हो ज्ञान का सूरज उजाला जग में फैलेगा।।
अविद्या नाश तब होगा अंधेरी दूर जायेगी।।
जो जलते हैं परस्पर देख सम्मृद्धि को हर दम।
ये उनके मन में प्यार की सदा गंगा बहायेगी।।
न होगा कोई भी लम्पट लूटेरा चोर कर्मचारी।
जगत् गुरुदेश भारत को ये फिर से चम-चमायेगी।।
वैभव सम्पादाओं के ये बादल खूब बरसेंगे।
सभी निश्चित होवेंगे खुशी घर-घर में आयेगी।।
अटल विश्वास जागेगा प्रभु से है "वन्दना" मेरी।
किम् कर्त्तव्य विमूढ़ों को ये कुछ करके दिखायेगी।।

ऋषि को समर्पित भजन

- आचार्य रामसुफल शास्त्री (हाँसी),
वेदिक प्रवक्ता, मो. 9416034759, 9466472375

हरियाणवीं तर्ज-छैल गैल्यां जांगी.........

सोयी हुई जनता जगाई दयानन्द ने।
वेदों की शिक्षा दिलाई दयानन्द ने॥

पाखण्ड था छाया हुआ शिक्षा न दी जाती थी।
नारी तो बस शूद्र और नीच कहाती थी॥
स्त्री शिक्षा आरम्भ करवाई दयानन्द ने॥1॥

जाति-पाति द्वेषभाव भेद ऊँच नीच का।
अन्तर भी काफी था मानवों के बीच का॥
सभी की एक जाति बताई दयानन्द ने॥2॥

वेदों को कहते थे कि शंखासुर ले गया।
बदले में पुराणों के गपोडों को दे गया॥
फिर से वेद ज्योति जलाई दयानन्द ने॥3॥

लोग दासता की जंजीरों में जकड़े थे।
पण्डे पुजारी बस पेट यहां भरते थे॥
स्वराज की हुंकार लगाई दयानन्द ने॥4॥

सच्चे शिव के भक्तों दयानन्द की मान लो।
वेद है वाणी सच्चिदानन्द की जान लो॥
"सुफल" सच्ची भक्ति सिखाई दयानन्द ने॥5॥

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- ससुर अपने दामाद को चप्पलो से पीट रहा था **पड़ोसी बोला**-क्यों मार रहे हो आप अपने दामाद को?
  ससुर-मैंने इसको अस्पताल से व्हाट्सअप किया था कि तुम बाप बन गए हो और यह कमीना इसने उस मैसेज को 100 लोगों को फॉरवर्ड कर दिया।
- **प्रिया** तीसरी बार ड्राइविंग लाइसेंस का इंटरव्यू देने गई।
  ऑफिसर-अगर आपके एक तरफ पति और दूसरी तरफ आपका भाई होतो आप किसे मारोगी।
  प्रिया-पति को
  अफसर-अरे मैडम आपको तीसरी बार बता रहा हूं कि आप ब्रेक मारोगी।
- **पहला दोस्त**-ओह सुन यार सेकेण्ड ईयर का रिजल्ट आ गया क्या?
  दुसरा दोस्त-हाँ आ गया और तमीज से बात करो मेरे साथ।
  पहला दोस्त-क्यों
  दुसरा दोस्त-क्योंकि अब मैं तेरा सीनियर हो गया हूं।
- **पप्पु**-पापा मैं फिर फैल हो गया?
  पापा-चिंता मत करो तुम शेर के बेटे हो।
  पप्पु-हाँ पिताजी मैडम भी यही कहती है।
  पापा-क्या तुम शेर के बेटे हो।
  पप्पु-कुछ ऐसा ही। कह रही थी पता नहीं तू किस जानवर की औलाद है।
- **पत्नी**-आप बहुत भोले हैं कोई भी आसानी से फंसा लेता है।
  पति-हां शुरुआत तुम्हारे पापा ने की थी।

धार्मिक व सामाजिक अंधविश्वास व पाखण्डों का कारण अविद्या है।

- मनमोहन कुमार आर्य

हमारे देश में अनेक प्रकार के धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड प्रचलित हैं। इन अन्धविश्वास एवं पाखण्डों का कारण देश में प्रचलित सभी मत-मतान्तरों की अविद्या है। इस अविद्या के कारण अनेक प्रकार की कुरीतियां भी प्रचलित हैं और सामाजिक विद्वेश उत्पन्न होने सहित किन्हीं दो समुदायों में हिंसा भी होती रहती है। अन्धविश्वासों व पाखण्डों का कारण अविद्या है, यह सत्य होने पर भी कोई मत-मतान्तर इसे स्वीकार नहीं करता। सभी मतों के आचार्य एवं उनके अनुयायी मुख्यत: अविद्या एवं अपने-अपने प्रयोजन की सिद्धि आदि के कारण जानबूझकर भी सत्य वैदिक मत को स्वीकार नहीं करते। यह भी तथ्य है कि महाभारतकाल के बाद लोगों के आलस्य व प्रमाद के कारण वैदिक धर्म का सत्यस्वरूप विकृत व विलुप्त हो गया था। लोगों ने वेदाध्ययन करने में प्रमाद किया जिससे सत्य वेदार्थ विलुप्त होते गये। कुछ स्वार्थी प्रकृति के लोगों ने अपनी अविद्या के कारण वेदों के मिथ्या व भ्रान्तियुक्त अर्थ भी किये जिससे समाज में मिथ्या विश्वासों की वृद्धि हुई। समय बीतने के साथ समाज में अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड तथा सामाजिक कुरीतियों में वृद्धि होती गई। बौद्ध काल में महात्मा बुद्ध ने मुख्यत: यज्ञ में पशु हिंसा एवं अन्य कुप्रथाओं का विरोध किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने बौद्धमत की स्थापना की। इसी कालावधि में देश में महावीर स्वामी के अनुयायियों ने जैनमत की भी आलोचना की। लोग वैदिक मत छोड़कर नव-बौद्ध-मत व जैनमत को स्वीकार करने लगे। कालान्तर में स्वामी शंकराचार्य जी का आविर्भाव हुआ। उन्होंने बौद्ध व जैन मत की ईश्वर के अस्तित्व को न मानने के सिद्धान्त को वेद विरुद्ध होने के कारण उनसे शास्त्रार्थ करके उनकी मान्यताओं का खण्डन किया और विजयी हुए। इसके परिणाम स्वरूप तत्कालीन जैनी वा बौद्धमत के राजाओं ने स्वामी शंकराचार्य के अद्वैतमत को स्वीकार किया। इससे बौद्ध व जैन मत पराभव को प्राप्त हुए और स्वामी शंकराचार्य का मत देश भर में प्रचलित हुआ। ऐसा होने पर भी देश व समाज से अज्ञान व अन्धविश्वास आदि समाप्त न हुआ और अल्पकाल में ही स्वामी शंकर की मृत्यु के कारण बौद्ध व जैन मत पुन: प्रभावशाली होने लगे। बौद्ध व जैन मत भी सत्य पर आधारित न होने के कारण वह भी सर्वमान्य नहीं हुए। वैदिक मत के अन्धविश्वास व मिथ्या परम्पराओं में वृद्धि होती गई। इस कारण वह भी वेद की सत्य मान्यताओं से बहुत दूर चले गये। कालान्तर में देश में 18 पुराणों का प्रचलन हुआ जिससे अनेक पौराणिक मत अस्तित्व में आये। मुख्य मत शैव, वैष्णव व शाक्त थे। कालान्तर में इनकी भी अनेक शाखायें हुई और अन्य अनेक नये मत प्रचलित हो गये जिनका आधार सत्य ज्ञान न होकर अविद्या थी। स्वामी दयानन्द (1825-1883) के समय तक देश में मत-मतान्तरों की वृद्धि के साथ अन्धविश्वासों व कुप्रथाओं में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई और आज भी यह क्रम बढ़ता ही जा रहा है।

संसार में जितने भी मत-मतान्तर हैं उनमें कुछ ज्ञानपूर्वक मान्यतायें भी हैं, वह सब मतों में सामान्य हैं। मत-मतान्तरों की जो मान्यतायें भिन्न व परस्पर विरुद्ध हैं, उसका कारण अज्ञान वा अविद्या है। **धर्म सार्वभौमिक सत्य सिद्धान्तों को कहते हैं जिनका प्रतिपादन सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेदों में किया है। वेद की सभी बातें व सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने वेद के सिद्धान्तों की परीक्षा कर इसे सत्य व धर्म का मूल सिद्ध किया था। ऋषि दयानन्द ने अपने समय में भी वेदों के सिद्धान्तों को समग्रता व सम्पूर्णता से सत्य पाया और उसका प्रचार किया। उन्होंने डिन्डिम घोष कर कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसके साथ उन्होंने यह सिद्धान्त भी दिया कि 'सब सत्य विद्या (चार वेद) और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।'** इसका अर्थ यह है कि चार वेद और सृष्टि के पदार्थ जिन्हें हमारे विद्वान व वैज्ञानिक विद्या से जानते हैं उन सब पदार्थों का आदि मूल अर्थात्

रचयिता, उन्हें बनानेवाला व पालक परमेश्वर है। वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द ने ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप भी जनसमुदाय के सम्मुख रखा और घोषणा की कि **''ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।''** आज भी कोई मत व उनका बड़ा या छोटा आचार्य और वैज्ञानिक ऋषि दयानन्द के इस सत्य सिद्धान्त को झुठला नहीं पाया। इससे ईश्वर विषयक यह सिद्धान्त सत्य सिद्ध हुआ है।

जीवात्मा अर्थात् मनुष्यात्मा व प्राणिमात्र की आत्मा के विषय में ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के **'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश'** में लिखा है कि **जो इच्छा, द्वेश, सुख, दु:ख और ज्ञानादि गुणयुक्त अत्पज्ञ नित्य है उसी को 'जीव' मानता हूं।** उन्होंने जीव और ईश्वर के स्वरूप के विषय में आगे लिखा कि जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य-व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न है अर्थात् जैसे आकाश से मूर्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न होगा इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्य-व्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्धयुक्त मानता हूं। ऋषि दयानन्द अभाव से भाव का उत्पन्न होना व भाव का अभाव होना नहीं मानते। यह आधुनिक विज्ञान का नियम भी है कि हर पदार्थ की उत्पत्ति का कोई एक व कुछ उपादान कारण होते हैं। उस उपादान कारण से ही ज्ञान व शक्ति का प्रयोग कर कोई चेतन सत्ता, ईश्वर व मनुष्य, नया पदार्थ बना सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने भी दर्शनों के आधार पर इस सृष्टि का निमित्त कारण ईश्वर तथा उपादान कारण प्रकृति को बताया हैं। वैदिक सिद्धान्तों से भी कारण-कार्य सिद्धान्त पुष्ट होता है। यह भी महत्वपूर्ण बात है कि किसी वेद में अन्य मत-मतान्तरों के ग्रन्थों की तरह यह नहीं लिखा व कहा है कि ईश्वर ने कहा कि **'हो जा' या 'बन जा'** और इतना कहने मात्र से ही यह ब्रह्माण्ड बन गया। ऐसा कहना व मानना अज्ञानता व सत्य का परिहास है। महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का किसी भी मत व वैज्ञानिकों ने खण्डन नहीं किया। उनमें खण्डन की क्षमता है भी नहीं। **हमारा मत है कि जो बात तर्क व युक्ति से सिद्ध हो वह सत्य होती है और वही विज्ञान भी है।** ईश्वर व जीवात्मा के सम्बन्ध में वेद, दर्शन और ऋषि दयानन्द सहित हमारे सभी ऋषि पर्याप्त प्रमाण देते हैं। अत: संसार में वेद और वैदिक सिद्धान्त, जो महर्षि दयानन्द आदि ऋषियों के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि में वर्णित हैं, वह पूर्ण सत्य व पूरे विश्व के सभी लोगों के लिए मान्य व स्वीकार्य होने चाहिये। इन्हें मानकर ही देश व समाज सुखी हो सकता है और साथ ही कल्याण को प्राप्त हो सकता है। समस्त मानव समाज मिथ्या अन्धविश्वासों सहित पाखण्डों से मुक्त भी हो सकता है।

अन्धविश्वास का अर्थ होता है कि किसी असत्य, लाभरहित अथवा हानिकारक मान्यता व सिद्धान्त को सत्य स्वीकार कर उसका आचरण करना। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, निराकार, सर्वशक्तिमान, अजन्मा आदि गुणों वाला है। सर्वव्यापक व निराकार स्वरूप वाले ईश्वर की मूर्ति व आकृति कदापि नहीं बनाई जा सकती। ईश्वर प्रत्येक स्थान पर होने से मूर्ति के अन्दर व बाहर दोनों स्थानों पर होता है। फिर मूर्ति के बाहर स्वीकार न करना व उसे दृष्टि से ओझल करना, मूर्ति से बाहर उसका ध्यान न करना, ईश्वर को मूर्ति में ही मानना तथा उस पाषाण जड़ मूर्ति से अपनी इच्छाओं की पूर्ति व कामनाओं को सफल होना मानना यह घोर अविद्या व अज्ञान है। ऋषि दयानन्द और वेदों की मान्यता है कि हम मूर्ति की कितनी भी पूजा कर लें, उससे हमें किसी प्रकार के सुख व कामना पूर्ति आदि का कोई लाभ नहीं होता। इसके स्थान पर यदि हम ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापक, सर्वत्र उपलब्ध वा विद्यमान तथा सर्वशक्तिमान मानकर गायत्री मन्त्र आदि से उसका ध्यान, प्रार्थना व उपासना करते है तो इससे ईश्वर हमारी प्रार्थना को स्वीकार करता है। **फलित ज्योतिष भी मिथ्या ज्ञान है। इसको मानने से मनुष्य अपनी हानि ही करता है, लाभ इससे कुछ होता नहीं। आज विज्ञान ने विश्व में जो उन्नति की है वह फलित ज्योतिष की उपेक्षा करके ही की है। हर्ष का विषय है कि हमारे वैज्ञानिक भी फलित**

ज्योतिष को नहीं मानते। विवाह के अवसर पर जन्म पत्रियों का मिलान फलित ज्योतिष की मान्यताओं के आधार पर करते हैं। इस कारण कई योग्य वर-वधुओं के विवाह नहीं हो पाते। हमने ऐसे ज्योतिषी भी देखें हैं जिन्होंने किसी वृद्ध महिला को बताया कि तुम्हारे परिवार में पुत्र के यहां पुत्र उत्पन्न न होगा। वह महिला मर गई और उसके बाद उसके पुत्र के यहां दो पुत्र हो गये। वेदों के ऋषि दयानन्द ने भी फलित ज्योतिष को मिथ्या और देश की गुलामी का प्रमुख कारण माना है।

मृतक श्राद्ध भी मिथ्या मान्यता है। मरने के बाद जीवात्मा का पुनर्जन्म हो जाता है या फिर लाखों व करोड़ों आत्माओं में किसी एक धर्मात्मा व वेदज्ञानी मनुष्य की आत्मा का मोक्ष होता है। अन्य सब आत्माओं का पुनर्जन्म होना निश्चित है। जिस आत्मा का पुनर्जन्म हो गया उसे भोजन जहां उसका जन्म हुआ है, वहां उसके माता-पिता आदि व वह स्वयं पुरुषार्थ कर प्राप्त करेगा। यहां से बिना पते के भोजन वहां कदापि नहीं पहुंच सकता। वर्ष में एक दो बार भोजन बनाकर अग्नि में डाल देने से मृतक का पूरे वर्ष के लिए पेट नहीं भर सकता। यदि यह मान लें कि मृतक आत्मा का जन्म नहीं हुआ तो भी उस अजन्मी आत्मा को तो भोजन की आवश्यकता ही नहीं होगी। भोजन की आवश्यकता तो शरीर को होती है न कि आत्मा को। **अतः मृतक श्राद्ध भी अन्धविश्वास व पाखण्ड है और इसे कुछ लोगों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए बनाया हुआ प्रतीत होता है।** जन्मना जातिवाद भी एक बहुत बड़ा अन्धविश्वास व कुपरम्परा है। अतीत में यह बहुत से निर्दोष्ठा लोगों पर सबल लोगों के अत्याचार का कारण बना है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में सबसे पहले इसका विरोध किया था। आज के आधुनिक युग में जन्मना जातिवाद जारी है। यह लोगों के अज्ञान व अविद्या के कारण ही विद्यमान है अन्यथा इसे आज और अभी समाप्त कर देना चाहिये। किसी को भी जन्मना जातिवाचक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। अपने बच्चों के विवाह भी सबको गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर वैदिक धर्म के ही भीतर ही करने चाहियें। अविद्या और अन्धविश्वास केवल हिन्दूओं में ही नहीं हैं अपितु बौद्ध, जैन, ईसाई व मुसलमानों सहित सभी मत-मतान्तरों में भी हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्य के निर्णयार्थ सत्यार्थप्रकाश में मत-मतान्तरों की अविद्या व अन्धविश्वासों का दिग्दर्शन कराया है। सभी समझदार व बुद्धिमान मनुष्यों को सत्यासत्य का विचार कर अन्धविश्वास और पाखण्डों सहित मिथ्या कुपरम्पराओं का त्याग करना चाहिये और सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को पढ़कर एकमात्र सत्य वैदिक धर्म की शरण में आकर अपने जीवन को सुखी व कल्याण से युक्त करना चाहिये।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,
फोन:09412985121

खुशी क्या है?

खुशी एक अमूल्य खजाना है। यह कोई स्थूल चीज नहीं है। यह अनुभव किया जाने वाला भाव है। हम दूसरे को कहते हैं कि पहले आप मेरा कहना, मानो, मुझे बहुत खुशी होगी। दूसरा कहता है नहीं पहले आप मेरा कहना मानो तो मुझे बहुत खुशी होगी। अब मेरी खुशी आप पर आधारित है और आपकी खुशी मुझ पर आधारित है। दोनों बंधे हुए है। खुशी एक अहसास है, विचार नहीं। कोई भी वस्तु हमें खुशी नहीं दे सकती बल्कि वो मैं खुद अपने आप को देता हूं। खुशी वास्तव में, एक अनुभूती है, यह एक अनुभव है। इसे उत्पन्न करने के लिए कोई न कोई माध्यम तो चाहिए। सारे दिन में हम बहुत प्रकार के अनुभव करते हैं कभी खुशी का, कभी दर्द का, कभी चिन्ता का लेकिन इन अनुभूतियों का आधार क्या है? हमने एक बहुत सुन्दर फूल देखा, इससे बहुत अच्छी अनुभूति आई। यह कितना सुन्दर फूल है अगर यह सोच पैदा नहीं करेंगे तो उसे अनुभूति नहीं आएगी। अगर उन फूलों चौथा रत्न ''वैराग्य'' हमेशा याद रखना चाहिए कि जन्म हुआ है तो मृत्यु भी निश्चित है। जो साथ नहीं आया वह साथ जाएगा भी नहीं। किसी के प्रति लोभ-मोह नहीं रखना। अगर हम इन रत्नों को संभाल कर रखेंगे तो अवश्य खुश रहेगें।

-श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा, बहादुरगढ़

स्वामी दयानन्द को अपना गुरु और आर्यसमाज को धर्म-माता कहने वाले की कहानी

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

"स्वामी दयानन्द सरस्वती जी मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हें गुरु माना है। वे मेरे धर्म के पिता हैं और समाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोदी में मैं पला। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्तव्यपालन करना सिखाया तथा मेरी माता ने मुझे एक संस्था में बद्ध होकर नियमानुवर्सिता का पाठ दिया।"

ये विचार थे उस महामानव के जो ऋषि दयानन्द जी को अपना आचार्य मानते हुए तथा अपने को गर्व के साथ एवं स्पष्ट रूप से आर्य समाज घोषित करते हुए स्वदेशी एवं स्वराज्य की भावना से पूरित हो राष्ट्र की स्वाधीनता के क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ जिसे लोग पंजाब केसरी लाल लाजपत राय के नाम से जानते है। ऋषि दयानन्द जी की प्रेरणा से वह नरकेसरी पुरुष देश को मिल सका, जोकि वाणी का जादूगर था तथा जिसकी दहाड़ से लन्दन की पार्लियामैन्ट की दीवारें, बर्तानवी राज की चूलें तक हिल जाया करती थी।

आप का जन्म 28 फरवरी 1865 को अपने नानीहाल के गाँव ढूंढ़िक जिला फरीदाकोट (पंजाब) में हुआ। आपके पिता लाल राधाकृष्ण जी अग्रवाल उर्दू, फारसी के अच्छे जानकार एवं अध्यापक का कार्य करते थे। आप के पिता जी एक धार्मिक व्यक्ति थे। आप पर पिता जी की धार्मिक प्रवृति का बहुत प्रभाव पड़ा। आप आर्य समाज के सदस्य बने गये क्योंकि आप आर्य समाज के राष्ट्रीय एवं सामाजिक आन्दोलनों से बहुत प्रभावित हुए थे। आप अछूतोद्धार शिक्षा एवं समाज के अनेक कार्यों में सक्रिय रहे। अपनी निर्भीकता तथा दृढ़ संकल्प के कारण 'पंजाब केसरी' तथा 'शेरे पंजाब' की उपाधियों से विभूषित हुए।

आर्य समाज में प्रवेश की कथा-1882 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आर्य समाज लाहौर के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित हुए। इस मार्मिक प्रसंग का वर्णन लाला जी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है-"उस दिन स्वर्गीय लाला मदन सिंह जी बी.ए. (डी.ए.वी. कॉलेज के संस्थापकों में प्रमुख) का व्याख्यान था। वे मुझ से बहुत प्रेम करते थे। उन्होंने व्याख्यान देने से पूर्व आर्य समाज मन्दिर की छत पर अपना लिखा व्याख्यान सुनाया और मेरी सम्मति पूछी मैंने उस व्याख्यान को बहुत पसन्द किया था। जब मैं छत से नीचे उतरा तो लाला साई दास जी (आर्य समाज लाहौर के प्रथम मन्त्री) ने मुझे पकड़ लिया और अलग ले जाकर कहने लगे कि हमने बहुत समय तक इन्तजार किया है कि तुम हमारे साथ मिल जाओ। मैं उस घड़ी को भूल नहीं सकता। मैंने उतर दिया कि मैं तो आपके साथ हूँ। उन्होंने उसी समय आर्य समाज के समासद बनने का प्रार्थना पत्र मंगवाया और मेरे सामने रख दिया। मैं दो-चार मिनट तक सोचता रहा, परन्तु उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे हस्ताक्षर लिये बिना तुम्हें जाने नहीं दूंगा। मैंने ज्यों ही उस पर हस्ताक्षर किये तो मैंने उनके चेहरे पर प्रसन्नता की ऐसी झलक देखी जैसे कि उन्हें हिन्दुस्तान की बादशाहत मिल गई हो। उन्होंने एकदम पं. गुरुदत जी को बुलाया और सारा हाल सुनाकर मुझे उनके हवाले कर दिया। वे भी मुझे से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। लाला मदन सिंह के प्रवचन के पश्चात मेरा और पं. गुरुदत जी का व्याख्यान कराया गया। लोगों ने हम दोनों के व्याख्यान की बहुत प्रशंसा की। खूब तालियां बजी और इन तालियों ने मुझ पर जादू-सा प्रभाव डाला। यह थी मेरी आर्य समाज में प्रेवश की कथा।

कन्हैया लाल आर्य

वकालत के क्षेत्र में-अपने पैतृक गाँव, जगराँव

में एक मुख्तार (छोटे वकील) के रूप में वकालत प्रारम्भ की, कस्बा छोटा था, वहाँ कार्य बढ़ने की अधिक सम्भावना नहीं थी। अत: रोहतक, हिसार तथा 1892 में लाहौर आ गये। यों तो लाला जी ने समाज सेवा के कार्य हिसार में प्रारम्भ कर दिया थे परन्तु लाहैर (जो कि उस समय सार्वजानिक गतिविधियों का केन्द्र बन चुका था। मैं आकर आप सार्वजनिक एवं आर्य समाज द्वारा चलाये गये सामाजिक सुधारों एवं राजनैतिक आन्दोलन में भी सक्रिय हो गये।

राजनीति में प्रवेश:-आप 1888 में इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए, 1906 में पं. गोपाल कृष्ण गोरवले जी के साथ कांग्रेस के शिष्ट मण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गये। वहां से अमेरिका गये। उन्होंने कई बार विदेश यात्रायें की और वहां रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की वास्तविक राजनैतिक परिस्थिति से परिचित कराया।

स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रियता-'गदर पार्टी' का इतिहास नाम पुस्तक के लेखक श्री प्रीतम सिंह पंछी लाला जी के सम्बन्ध में लिखते हैं-भारत के स्वाधीनता प्रेमियों ने 'बन्धन समाज' नाम एक गुप्त संस्था का निर्माण किया था जिनको बाहर से सहायता पहुँचाने वालों में लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, सरदार अजीत सिंह आदि प्रमुख थे। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के इस प्रमुख शिष्य के कांग्रेस में प्रवेश करते ही कांग्रेस की विचारसारणी तथा कार्यकलाप की धारा ने एक नई दिशा में मोड़ ले लिया, यही कारण है कि भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध के महारथियों की त्रिपुटी (बाल गंगाधार तिलक, विपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपतराय) में इनका नाम गौरव के साथ लिया जाता है। आर्य समाज के लिए इससे अधिक गौरव की बात और क्या हो सकती है कि सन् 1907 का भयंकर समय था जबकि अंग्रेजी सरकार को यह सन्देह हो गया कि पंजाब के अन्दर लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह के नेतृत्व में आर्य समाज के कई हजार स्वयंसेवक 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की अर्धशताब्दी मनायेंगे और अंग्रेजी सरकार के प्रति बगावत करेंगे। वहाँ कई स्थानों पर लाला जी ने अपने व्याख्यानों से पूरे (पंजाब हरियाणा, पंजाब, हिमाचल) में राजनैतिक गर्मी की लहर उत्पन्न कर दी है। दस मई का दिन निकट आ रहा था, अंग्रेजों, को अपनी भावी मौत निकट आती दिखाई दे रही थी। ब्रिटिश सरकार ने भावी संकट से बचने के लिए 9 मई को प्रात: ही अचानक दोनों आर्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और बिना मुकदमा चलाये दण्ड स्वरूप किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिया। इतना होने पर भी अंग्रेज सरकार मन ही मन इतनी घबराई हुई थी कि 10 मई की रात को होने वाले कत्ले आम से सुरक्षित बच निकलने के लिए लाहौर के सारे अंग्रेज परिवार किले में एकत्रित होकर बेचैनी के साथ समय व्यतीत करते रहे, दूसरी ओर रात भर रेलवे स्टेशन पर एक स्पेशल सवारी गाड़ी खाली खड़ी धुआं छोड़ती रही, वह इसलिए कि यदि कत्ले आम हुआ तो सारे ही अंग्रेज परिवार उसमें बैठकर जान बचाने के लिए सकुशल पंजाब से बाहर जा सकेंगे।

अंग्रेज सरकार को लाला जी से भय:- श्री अलगू राय शास्त्री जी की जीवनी लिखते हुए कहा है "राष्ट्र के इस वीर पुजारी को कितना भयानक समझा गया कि यह इस बात से स्पष्ट है कि लाला जी को अपने निर्वासिन काल में एक यूरोपियन अधिकारी ने बताया कि आपको सेनाओं की राजभक्ति में हस्तक्षेप करने के कारण दूसरा नाना साहब समझा गया है। इतना भयानक जानकर ही लाला जी को बिना मुकदमा चलाये माण्डला के किले में अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया गया। जब लाला जी को स्पेशल गाड़ी से माण्डला ले जाया जा रहा था, तब विद्रोह हो जाने की आशंका से लाला जी को पंजाब से बाहर निकालकर अवध रूहेलखण्ड पहुँचने पर ही अपने डिब्बे की खिड़कियाँ खोलने की आज्ञा प्रदान की गई। पाठकगण! निश्चय से गोराशाही की आँखों में इतना अधिक भयानक होने का गौरव ऋषि दयानन्द जी के इसी अमर शिष्य को प्राप्त हुआ, क्या यह कम गौरव की बात है।

माण्डले से वापिस आने पर:- आपने माण्डले से वापिस देश में आकर पूरे देश का भ्रमण किया और पूरे देश के युवकों को अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्तिकारी कार्यों की प्रेरणा दी। प्रथम विश्वयुद्ध

के समय आपको पुनः निर्वासित करके अमेरिका भेज दिया गया। वहाँ भी अपने प्रवासी भारतीयों को संगठित किया और 'यंग इंडिया' नामक समाचार पत्र निकालकर अंग्रेजी शासन का भण्डा फोड़ किया तथा भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के लिए अमेरिकी जनता का समर्थन प्राप्त किया। सन् 1923 में आप केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गये। इसी विधान सभा में इन्होंने साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव रखा जो निर्वाचित सदस्यों के भारी बहुमत से **'वन्दे मातरम्'** के नारे के साथ स्वीकृत हुआ।

साइमन कमीशन का विरोध-सन् 1922 में असहयोग आन्दोलन स्थागित हो गया था, स्वराज्य पार्टी का गठन हुआ, परन्तु वह भी अपनी पूर्व घोषणाओं के अनुसार न तो विधानसभाओं का अन्त करा सकी और नहीं उन्हें सुधार सकी। कांग्रेस कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी। जनता बड़ी दुविधा में थी परन्तु लाला जी के व्याख्यानों ने जनता का अंग्रेज सरकार के प्रति विद्रोह बढ़ता जा रहा था। ब्रिटिश सरकार जनता की इस सुगबुगाहट को देख और समझ रही थी कि अब कुछ न कुछ भयंकर होने वाला है। जनता की सहानुभूति क्रान्तिकारियों के प्रति बढ़ रही थी। इस स्थिति से निपटने के लिए वायसराय ने 8 नवम्बर 1927 को घोषणा की कि भारत की स्थिति का अध्ययन करने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक सदस्यीय कमीशन भारत आ रहा है। यह कमीशन स्थान-स्थान पर जाकर एक रिपोर्ट तैयार करेगा और भारत में सुधारों के लिए सिफारिश करेगा। कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य न होने के कारण इसका विरोध प्रारम्भ हो गया। सारे देश में इस राष्ट्र विरोधी कमीशन के बहिष्कार करने का निश्चय किया गया।

सबसे पूर्व बम्बई में 'साइमन गो बैक' के नारों के साथ ऐसा भयानक प्रदर्शन हुआ कि ब्रिटिश सरकार घबरा गई। बम्बई के पश्चात दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता में 'साइमन गो बैक' के नारों से ब्रिटिश सरकार की स्थिति और खराब हो गई। जब साइमन कमीशन लाहौर पहुँचा तो उस दिन पूरे नगर में हड़ताल हुई, चारों ओर काले झण्डों ने उसका स्वागत किया गया। लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में हो रहा था। वीर भगत सिंह स्वयं लाला लाजपत राय जी के पास गये और उन्हें नौजवान भारत सभा के प्रदर्शन का नेतृत्व करने के लिए आग्रह किया। लाला जी को स्वीकृति के पश्चात वे नौजवान लाला जी को लाहौर स्टेशन पर लेने के लिए पहुँच गये। लाला जी उस समय साक्षात् क्रान्ति की प्रतिमा लग रहे थे। पुलिस लाला जी तथा नौजवान भारत सभा के सदस्यों को खदेड़ने का पूरा प्रयास कर रही थी परन्तु लाला जी का मोर्चा अविजित रहा। जब मामूली लाठी चार्ज से मोर्चा नहीं टूटा तो पुलिस कप्तान हकार ने लामबन्द होकर मोर्चे पर कठोर आक्रमण करने के आदेश दे दिये। पुलिस कप्तान स्काट का आदेश पाते ही सहायक पुलिस कप्तान एस.पी. साण्डर्स ने लाठियों से सामने की भीड़ पर बड़ी क्रूरता से आक्रमण किया और पुलिस बर्बरता पूर्ण ढंग से भीड़ को रौंदगी हुई आगे बढ़ गई। साण्डर्स की एक लाठी लाला जी के सिर पर तनी छतरी पर और दूसरी लाठी का भरपूर बार उनके कन्धे पर पड़ा।

उसी सायंकाल कांग्रेस की ओर से मोरी दरवाजे के पास मैदान में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन धारा 144 को तोड़कर की गई। इस सभा में लाला जी ने प्रातः काल की घटना की निन्दा करते हुए ब्रिटिश सरकार को चेतावनी दी, "जो सरकार निहत्थी प्रजा पर इस प्रकार अत्याचार करती है, वह सरकार असम्भ्य और जंगली है। ऐसी सरकार अब अपने जाने के दिन गिन लें" इसके साथ ही उन्होंने घोषणा की, "I declare that the blows hurled at me will be the last natils in the coffin of the British Rule in India" अर्थात् मैं घोषणा करता हूं कि मुझ पर पड़ी हुई एक-एक लाठी ब्रिटिश सरकार के कफन में अन्तिम कीलों का काम देगी।"

साईमन कमीशन भारत का दौरा करके चला

गया परन्तु उस लाठी के प्रहार के कारण 17 नवम्बर 1928 को लाला जी का देहान्त हो गया। लालाजी की मृत्यु होते ही जनभावना अंग्रेज सरकार के विरूद्ध तूफान बन भड़क उठी। यह तूफान किसी के रोके न रूका। लाला जी की अर्थी के साथ अन्त्येष्टि कार्यक्रम में लगभग डेढ़ लाख लोग सम्मिलित हुए। वे सब लोग ऐसे रो रहे थे जैसे कोई उनका सगा-सम्बन्धी अन्तिम विदाई लेकर चल पड़ा हो। भारत की इस स्वतन्त्रता वेदी पर अपने जीवन की आहुति देकर पूरे राष्ट्र को प्रेरित करने के लिए सम्भवतः इस भारत माता के पुत्र ने जन्म लिया था।

लाला जी का व्यक्तित्वः- लाला जी का व्यक्तित्व बहु-आयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, सेवाभावी, समाजसेवक, राजनैतिक, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबन्धु चितरंजनदास की धर्मपत्नी श्रीमती वसन्ती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था, 'क्या देश में कोई ऐसा क्रान्तिकारी युवक नहीं है जो भारतकेसरी लाला जी की मृत्यु का बदला ले सके।'' जब यह बात सरदार भगतसिंह तक पहुँची तो उसने लाला जी लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मार कर उस देश भक्त की मृत्यु का बदला ले लिया। लाला लाजपत राय जी देश के स्वाध ीनता संग्राम के महान सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदैव स्मरण रखेगें।

उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर असंख्य युवकों ने अपनी सुख-सुविधाओं वाले जीवन को त्याग कर देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने और किसी भी मूल्य पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने का मार्ग अपनाया। जीवन भर जिन सिद्धान्तों के लिए वे संघर्ष करते रहे उन्हीं 'सिद्धान्तों' की पूर्ति के लिए अपनी मृत्यु से लाखों युवकों को प्रेरित करते हुए भारत माता के 'लाल' अमर हो गये।

4/45, शिवाजी नगर, गुरुग्राम,
हरियाणा, मो. 9911197073

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की
हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रदूत थे महर्षि दयानन्द

- आचार्य रामसुफल हाँसी

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है की उद्घोषणा करके महर्षि दयानन्द ने अपने हृदय की पीड़ा को जनमानस में भरते हुए समग्र देश में स्वाधीनता की लहर को उठाने का काम किया और राष्ट्रीय चेतना प्रज्ज्वलित कर स्वतन्त्रता की ज्वाला को जलाया। ऐसे महान् राष्ट्र भक्त महर्षि दयानन्द का नाम दुनिया के सर्वोच्च स्थान पर स्वर्णाक्षरों में लिखा होना चाहिए। महर्षि जी नव जागरण के पुरोधा, राष्ट्र चेतना के अग्रदूत और स्वतन्त्रता संग्राम के दूरदर्शी सेनानी थे। उन्होंने अपनी प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा के द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया मोड़ दिया, सोयी हुई चेतना को जगाया।

पराधीनता की पीड़ा उनके मर्म को चीरती रहती थी। गुलामी की वेदना से वे सदैव बेचैन रहते थे। देश की पीड़ा उनकी पीड़ा बन गयी थी। राष्ट्र का दर्द ऋषिवर के हृदय की गहराई तक पहुंच चुका था। उनकी लेखनी से अंकित एक-एक शब्द राष्ट्र भक्ति से भरा होता था। उनके मुखसे निकले एक-एक शब्द में स्वाधीनता के प्रति तड़प दिखाई देती थी। वे सत्यवादी निर्भीक संन्यासी थे। महर्षि दयानन्द ने घोषणा करते हुए कहा था कि स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है।

1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम महर्षि ने केवल देखा ही नहीं अपितु राष्ट्र भक्त दयानन्द ने उस चिंगारी को जलाया और उस संग्राम का नेतृत्व भी किया था। परन्तु प्रयास विफल हुआ।

महर्षि दयानन्द इस विफलता से बहुत ही हताश हुए। इस हताशा व निराशा के वातावरण में महर्षि दयानन्द को प्रज्ञा चक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द का भाव भरा संतोष जनक सानिध्य मिला। महान गुरुवर विरजानन्द ने प्रज्ञा चक्षु (नेत्रहीन) होते हुए मांझ-संवार कर पूरी तरह निखार दिया। उनमें पूर्ण सामर्थ्य भर दिया। दयानन्द को कुन्दन बना दिया।

महर्षि दयानन्द पूर्ण साहस-निर्भयता और दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ कार्य क्षेत्र में निकल पड़े। महर्षि के अंग-अंग में राष्ट्रीयता जगमगा रही थी। उनके द्वारा किये गये समस्त कार्यों का अन्तिम उद्देश्य स्वाधीनता ही था। वे हमेशा अखण्ड चक्रवती राज्य का चिन्तन किया करते थे।

स्वामी दयानन्द की निडरता का एक बड़ा अच्छा प्रेरणादायी प्रमाण है। 1873 में अंग्रेजों शासन काल में पराधीनता के दौरान इस देश के गवर्नर जनरल लार्ड नार्थ ब्रुक से महर्षि ने निर्भयता पूर्वक कहा था कि मैं तो प्रतिदिन प्रातः सायं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि हे परमपिता परमात्मा इस देश को विदेशियों की गुलामी से शीघ्र मुक्त कीजिए। महर्षि दयानन्द कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। वे एक युगदृष्टा महान ऋषि थे। स्वामी जी स्वतन्त्रता आन्दोलन के अग्रदूत ही नहीं अपितु राष्ट्रीय क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति, राजनीतिक क्रान्ति एवं धार्मिक क्रान्ति के समग्रदूत भी थे। महर्षि का तेज सबको आगे बढ़ने में गति प्रदान कर रहा था। उन्होंने राष्ट्रीय जागरण की नींव दृढ़ता से निर्मित की थी। महर्षि चहुँमुखी जागरण के प्रवर्तक थे। लोकसभा के अध्यक्ष रह चुके श्री अनन्त शयनम अयंगर ने कहा था कि यदि महात्मा गाँधी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह (दादा) थे।

-पुरोहितएवं वैदिक प्रवक्ता!, आर्य समाज
सैक्टर-7 बी, चण्डीगढ़,
मो. 9416034759, 9466472375

आपसे अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता टाईप की हुई सामग्री आप ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **–विक्रमदेव शास्त्री**

आओ दीप जलाएँ

- डॉ. शिवदत्त पाण्डेय

इस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में दीपावली की तैयारियाँ हो रही हैं। जनमानस दीप पर्व को मनाने में सोल्लास रत हैं। ऐसे समय में इस पर्व को मनाने के कारणों, लाभों व हानियों पर विचार करना मनुष्य होने के नाते आवश्यक प्रतीत होता है। क्योंकि मनुष्य का मतलब है **'मत्वा कर्माणि सीव्यति'** अर्थात् जो विचार करके कर्मों को करता है। आइए विचार करें कि हमें दीपावली क्यों मनानी चाहिए? इसका लाभ क्या है तथा इसके साथ क्या-क्या भावनाएँ जुड़ी हुई हैं?

किंवदन्ती है कि विजयादशमी को रावण पर विजय करने के उपरान्त जब राम देवी सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आये थे तो उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने घर-घर में दीप जलाये थे। तभी से हम दीपावली मनाने लगे हैं। वस्तुत: इतिहास के आलोक में जब हम इस किंवदन्ती की परीक्षा करते हैं तो यह घटना तर्क के आधार पर सत्य सिद्ध नहीं होती है।

वैदिक संस्कृति के प्राणतत्व हैं कृषि, ऋषि और यज्ञ। हम ऋषि परम्परा का अवलम्बन करते हुए यज्ञ की सिद्धि के लिए कृषि करते हैं और हमारा मूलमन्त्र है **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अर्थात् हे प्रभो! हमें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले चलो। तो प्रकाश की प्राप्ति के लिए दीप जलाना तो परमावश्यक है। जीवन ज्योति को आदीप्त करने के लिए प्रकाश को लाना आवश्यक है। जबसे सृष्टि बनी है तब से मनुष्य अन्धकार से युद्ध कर रहा है और इस पर सर्वांश में विजय पाने के लिए सामूहिक रूप से दीप जलाना आवश्यक है। घर-घर दीप जलाना अनिवार्य है। इसीलिए दीप जलाने को पर्व घोषित कर दिया गया है। 'पर्व' का मतलब है **''पृणाति पिपर्त्ति पालयति पूरयति प्रीणाति च जगदिति पर्व''**। अर्थात् जो पालन करता है, पूर्ण करता है और तृप्ति करता है उसे पर्व कहते हैं और तृप्ति होती है भूमा से, प्रचुरता से, आधिक्य से। इसीलिए दीप एक पर्व है जब इसे सब जलाते हैं और जो इसे ठीक-ठीक जलाते हैं श्रद्धाभाव से ज्ञानपूर्वक जलाते हैं उनके जीवन में पर्व-ही-होता है।

हम कृषि करते हैं, उससे हमें जो उपलब्ध होता है उसे प्रभु कृपा मानते हैं और उसका अकेले सेवन करना पाप समझते हैं। हम चाहते हैं कि हमारा जो कुछ हो वह समाज के लिए हो राष्ट्र के लिए हो। तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित। सब कुछ **'इदं राष्ट्राय इदन्न मम'**। तो जब आश्विन मास में फसल पक्कर किसान के घर आती है तो वह प्रसन्न, सन्तुष्ट और तृप्त होता था और अकेला न खाये इसलिए सर्वप्रथम यज्ञदेव को समर्पित करता था, सबके लिए देने का प्रयत्न करता अत: वैदिक परम्परा में यही 'नवसस्येष्टि' नये अन्न की इष्टि अर्थात् यज्ञ ही दीपपर्व था। अमावस्या के दिन सब 'नव' अन्न से यज्ञ करते थे घर-घर दीप जलाते थे यहीं से अर्थात् जब धरती पर और कोई संस्कृति नहीं थी, कोई सभ्यता नहीं थी, वैदिक संस्कृति और सभ्यता ही थी तब से हम दीपपर्व मनाते चले आये हैं। राम खुद उस संस्कृति में पले, बढ़े और उसके पोषक थे। यह पर्व तो आदिपर्व है, जिसे राम के पूर्वज भी मानते थे।

इस पर्व का नाम **'नवसस्येष्टि'** है अत: यह सिद्ध है कि जब से धरती पर मानवीय संस्कृति है तब से यह पर्व भी है। वैदिक संस्कृति चिरकाल से अजर-अमर है तो इसका कारण ये पर्व ही हैं। जिस वस्तु, जीवन, संस्कृति या सभ्यता में पर्व नहीं होते वह अक्षुण्ण चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकती। क्योंकि पर्व शब्द का अर्थ ही है पूर्ति। संस्कृत साहित्य में पर्व शब्द ग्रन्थि=गाँठ के पर्यायवाची के रूप में प्रसिद्ध है। संसार में सब ओर दृष्टिगोचर होता है कि जहाँ-जहाँ पर्व हैं, गाँठ है वहीं-वहीं वृद्धि है। जिसमें जितनी गाँठे हैं वह उतना ही ऋद्ध, वृद्ध और समृद्ध है। बांस में गांठ है इसीलिए वह इतना लम्बा है। दूर्वा घास में, लौकी आदि लताओं में जो वृद्धि है उसका कारण पर्व है, गांठ ही है। हमारी परम्परा तो पर्व से ही चलती है, इसलिए विवाह में भी हमारे यहाँ ग्रन्थि बन्धन होता है और जन्मदिवस को वर्षगांठ के रूप में मनाते हुए आयुष्यवृद्धि की कामना करते हैं।

हमें तो प्रतीत होता है कि यही पर्वों की महान् परम्परा ही है जिससे हम हजारों झञ्झावातों में भी अडिग खड़े हुए हैं और यदि हमें अपने को जीवित रखना है तो पर्वों को जीवन्त रखना होगा। यदि ये पर्व अपने यथार्थ रूप में जीवित रहेंगे तो हमारी सभ्यता जीवित रहेगी, हमारी संस्कृति जीवन्त होगी। अत: संस्कृति के संरक्षक इन पर्वों को जीवित और यथार्थरूप में यथार्थ भावनाओं

और प्रतीकों के साथ जीवित रखना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है और महत्तर उत्तरदायित्व है।

यह पर्व हमें सिखाता है कि हमारा जीवन केवल हमारे लिए नहीं होना चाहिए इसी भाव के साथ हम अपने घर में आए अन्न के साथ नवसस्येष्टि करते हैं तथा जैसे दीपक सामर्थ्यानुसार यथाशक्ति अंधेरे से लड़ता रहता है वैसे ही हम भी अज्ञान, अन्याय, अभाव और आलस्य रूपी अंधेरे से हमेशा लड़ते रहें। यह अंधेरा कभी हम पर हावी न होने पाये। जितनी शक्ति हमारे पास है उसी से इन अंधेरों से लड़ने के लिए सर्वदा सन्नद्ध रहें। सद्भावना, श्रद्धा और समर्पण के साथ दीप जलना ही पर्व है। दीपों की अवली=पंक्ति बना देने का नाम दीपावली है। किन्तु बाहर दीपक जलाकर अन्दर अन्धेरा रह गया तो पर्व सफल नहीं हो सकता। पर्व का साफल्य अंधेरे के नाश में है।

हम आर्यों के लिए जहाँ यह पर्व आर्य संस्कृति का परिचायक होने से महत्वपूर्ण है वहीं इस पर्व का महत्व अत्यन्त बढ़ जाता है, क्योंकि इसी दिन सन् 1883 में आर्यसमाज के संस्थापक, आर्यसंस्कृति के प्रचारक, वेद सभ्यता के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द रूपी महादीपक ने करोड़ों छोटे-छोटे दीपकों को प्रज्ज्वलित करने के उपरान्त निर्वाण को प्राप्त किया था। इस पर्व को हम श्रद्धांजलि दिवस के रूप में भी मनाते हैं। मेरे ऋषि ने मोक्ष की महानतम उपलब्धियों को छोड़कर करोड़ों करोड़ दीन दु:खियों, बिछुड़े-पिछड़े, दलित-वलित नरनारियों के दु:खों को दूर करने के लिए, परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारतमाता के कष्ट को हरने के लिए, स्वनिर्मित मूर्तियों की पूजा में संस्कृति को प्रभुनिर्मित मूर्तियों की पूजा सिखाने के लिए, ईश्वराज्ञा में स्वजीवन को समर्पित कर दिया था। जीवन भर पराये कष्टों को देख कर रोने वाले देव दयानन्द को हमने नहीं समझा और हमारी नासमझी के कारण ही उस देवदूत को सारे जीवन धूल-मिट्टी, कंकर-पत्थर सहना पड़ा और विषपान भी करना पड़ा। जड़ मूर्तियों के उपासक, पत्थरों के पुजारियों के पास पत्थर के अलावा और देने को था भी क्या? बड़प्पन तो उस ऋषि का था जो कहता था-"**मैं तो बाग लगा रहा हूँ, बाग लगाने में माली के सिर पर धूल मिट्टी गिर ही जाया करती है, मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि यह बगिया हरी-भरी रहे।**" हे दिव्य देवर्षि! तुम्हें प्रणाम।

जीवन भर तिल-तिलकर जलने वाले इस महादीप की ज्वलित शिखा की जीवन्तता ने करोड़ों लोगों को देदीप्यमान किया और जाते-जाते गुरुदत्त जैसे नास्तिक को आस्तिक बना गया। अहा! यह जीवन, यह दीपन, कितना प्यारा था की, तेरी इच्छा पूर्ण हो।" आइए इस महादीप की दीप्ति से दीप्तिमान होकर ऋषि प्रदर्शित मार्ग पर चलकर पिछड़ों के पथपर करोड़ों दीप जलाकर उस ऋषि को सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित करें। यही दीपावली का दीपन, प्रदीपन और उद्दीपन है। आओ दीप जलाएँ साधो! आओ दीप जलाएँ।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री दलवीर सिंह जी नजफगढ़ दिल्ली	21000/-
श्री महासिंह जी जांगड़ा परिवार द्वारा बहादुरगढ़	7200/-
श्री आशीष जी गुलिया सुपुत्री श्री जोगेन्द्र सिंह जी गुलिया फैन्ड्स कॉलोनी, बहादुरगढ़	5100/-
श्री अशोक कुमार व विक्रम सिंह विवेकानन्द नगर, बहा.	3100/-
श्री मा. करतार सिंह जी आर्य टीकरी कला, दिल्ली	2100/-
श्री अशोक कुमार जी नजफगढ़ दिल्ली	2100/-
श्री हर प्रसाद जी झुलझुली	2100/-
श्री महेश शर्मा जी नांगलोई दिल्ली	2100/-
श्री महेन्द्र शर्मा जी नजफगढ़ दिल्ली	2100/-
श्रीमती विमला देवी जी नजफगढ़ दिल्ली	2100/-
श्री धीर सिंह जी यादव नजफगढ़ दिल्ली	2100/-
पुरी ऑयल मिल (प्रा.लि.) बहादुरगढ़	2100/-
श्री अभिषेक छिकारा परनाला रोड, बहादुरगढ़	2100/-
श्री विनोद मलिक दिल्ली	2100/-
श्री उमेश गोसाई पश्चिम विहार दिल्ली	2000/-
श्री रतन गाइन ईसगाँव कैम्प, तेलांगना	1500/-
श्री नगेन्द्र जी लाकड़ा सैक्टर-9, बहादुरगढ़	1100/-
चिर. संचित जी लाकड़ा सुपुत्र श्री नगेन्द्र जी लाकड़ा ब.	1100/-
श्री सरदुल जी न्यू हाऊसिंग बोर्ड बहादुरगढ़	1100/-
अशोक कुमारी पत्नी श्री विक्रम विजय बहादुरगढ़	1100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रोहताश पहलवान जी उत्तम नगर, दिल्ली	1100/-
श्रीमती निर्मला देवी पत्नी श्री बलराज जी दहिया बहा.	1000/-
चिर. निकुंज दलाल सुपुत्र श्री मंजित दलत बहादुरगढ़	1000/-
कुमारी मेद्याली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र पारासर, बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	1000/-
श्री रंजित मण्डल ईसगाँव कैम्प, तेलांगना	1000/-
श्री ठाकुर पाल विलेजन-2, ईसगांव,कैम्प-2, तेलांगना	1000/-
श्री कृष्ण पद ढाली ईसगांव कैम्प, तेलांगना	1000/-
श्री सुभाष पाल ईसगांव, कैम्प, विलेजन-9,तेलांगना	1000/-
श्री नारायण कुण्डू, सिरपुर कागज नगर, तेलांगना	1000/-
श्रीमती श्री मनोरंजन राय शिक्षक, ईसगांव कैम्पस	1000/-
श्री प्रणव जी सुहाग सैक्टर-7, द्वारका दिल्ली	500/-
श्री महासिंह जी शक्ति नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री नरेश आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	500/-
श्री रामप्रताप जी नरवाला हरियाणा	500/-
श्रीमती सवर्णा आर्या पत्नी श्री जयप्रकाशार्य जी महम रो.	500/-
बसंत देवी जी (वर्षी मध्य) रेलवे रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री ठाकुर राय सिरपुर कागज नगर, तेलांगना	500/-
श्री स्वदेश शर्मा, सिरपुर कागज नगर, तेलांगना	500/-
श्रीमती पुष्पा, ईसगांव, कैम्पस, तेलांगना	500/-

गौशाला हेतु दान

निर्मला देवी पत्नी श्री नत्थुराम जी, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़ 1100/-

विविध वस्तुएं

फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कै. फैक्ट्री दिल्ली
200 रूपये, 1 बैग सरफ

श्री नेवान के जन्मदिवस पर श्री अनिल रेखा बरेजा गुरुग्राम
5100 रूपये की बच्चों की कुश्ती की कीट हेतु

विशिष्ट भोजन एक समय का देने वाले

कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पवार आश्रम बहादुरगढ़
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री पुरूषार्थ मुनि जी परिवार द्वारका दिल्ली
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री नत्थुराम शर्मा गुरुनानक कालोनी बहादुरगढ़
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री देवी दयाल नरेन्द्र कुमार जी उत्तम नगर, दिल्ली
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्रीमती पूनम मेहता पश्चिम विहार दिल्ली
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्रीमती मीनू देवी सैक्टर-9, बहादुरगढ़
1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री सोनू राठी शैपवैलजिम आत्मशुद्धि इन्कलेव, बहादुरगढ़
1 समय का विशिष्ट भोजन

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-ALLA0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष–41548503, चलभाष–9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 नवम्बर 2018 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

!!ओ३म्!!

"जीवेम भूयश्च शरदः शतात्"

आमन्त्रण पत्र

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक, वेद, यज्ञ, योग-साधना केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्याधिष्ठाता

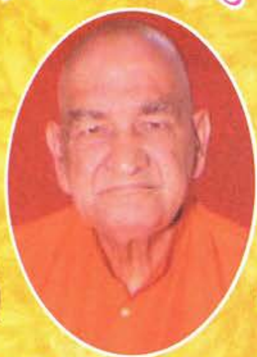

पूज्यपाद स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी' के

83वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा

बृहद्यज्ञ एवं भजन संध्या

मंगलवार 20 नवम्बर 2018

बृहद् यज्ञ सुर और संगीत का भव्य आयोजन

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी पूज्य स्वामी चितेश्वरानन्द जी सरस्वती
योग-यज्ञ विशेषज्ञ तपोवन देहरादून, उत्तराखण्ड की अध्यक्षता में

मध्याह्नोपरान्त् 2.30 बजे से 7.00 बजे तक तत्पश्चात् ऋषिभोज

गायक कलाकार:

इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक आमंन्त्रित किए गए हैं।

व्यवस्थापकः **विक्रम देव शास्त्री** संयोजकः **राजवीर आर्य**

निवेदकः सत्यानन्द (प्रधान), कन्हैयालाल (उपप्रधान), दर्शन कुमार अग्निहोत्री (मन्त्री), सत्यपाल वत्स आर्य (उपमंत्री)
आत्मशुद्धि आश्रम (पं. व्यास), बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), चलभाषः 9416054195, 9896578062

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक
नवम्बर 2018
छपी पुस्तक - पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

आत्शुद्धि आश्रम की चित्रमय झलकियां

आत्मशुद्धि आश्रम को गौदान देते हुए
पूज्या माता पूनम मेहता एवम् सुपुत्र, पश्चिम विहार, दिल्ली

फरूर्खनगर मासिक यज्ञ समारोह

आर्य समाज धनौरा टिकरी के सदस्यों को सम्मानित करते हुए
पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी, श्री पुरुषार्थ मुनि जी एवम् श्री ललित चौधरी जी

आत्मशुद्धि आश्रम के उपप्रधान श्री कन्हैयालाल जी आर्य
आश्रम के बच्चों को कुश्मी कीट देते हुए

आत्मशुद्धि आश्रम यज्ञशाला में आर्य समाज तेलांगना
के सदस्य यज्ञ करते हुए।

लेन्स क्लब बहादुरगढ़ के सदस्यों द्वारा आत्मशुद्धि
आश्रम के बच्चों को फल, कॉपी पेन, चॉलेकट बांटते हुए